आधुनिक युग में पत्रकारिता एंव हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियाँ

AADHUNIK YUG MEIN PATRAKARITA EVAM HINDI PATRAKARITA KI CHUNAUTHIYAN

Vinisha.J

(17PHJ003)

Thesis submitted to

Avinashilingam Institute For Home Science And Higher Education For Women
Coimbatore - 641 043

In Partial Fulfillment Of The Requirements For The Degree Of
Master Of Arts In Hindi And Journalism
April 2019

आधुनिक युग में पत्रकारिता एंव हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियाँ

AADHUNIK YUG MEIN PATRAKARITA EVAM HINDI PATRAKARITA KI CHUNAUTHIYAN

Vinisha.J

(17PHJ003)

Thesis submitted to

Avinashilingam Institute For Home Science And Higher Education For Women
Coimbatore - 641 043

In Partial Fulfillment Of The Requirements For The Degree Of
Master Of Arts In Hindi And Journalism
April 2019

G. Shanthi 25/4/19.

Signature of Head of the Department
विभागाध्यक्षा

Shashi Prabha Jai

Signature of the supervisor
निर्देशिका

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया गया है कि यह शोध – प्रबंध शोधार्थिनी

द्वारा ही किया गया है।

विभागाध्यक्षा | निर्देशिका | शोधार्थिनी

हिन्दी विभाग

अविनाशिलिंगम इंस्टिट्यूट फॉर होम साइंस एण्ड हैयर एजुकेशन फॉर विमेन

कोयम्बत्तूर – 641043

एम.ए. हिन्दी पत्रकारिता हेतु प्रस्तुत शोधप्रबंध

April 2019

आभार प्रदर्शन

मैं अविनाशिलिंगम इंस्टिट्यूट फॉर होम सइंस एण्ड हैयर एजुकेशन फॉर उमन कोयम्बत्तूर के सम्माननीय कुलाधिपति महोदय पद्मश्री डॉ. पी. आर. कृष्णकुमार जी पी.एच.डी एवं उपकुलाधिपति महोदया डॉ. प्रेमावती विजयन जी, एम.एस.सी, एम.एड, एम.फिल, पी.एच.डी और हमारी कुलसचिव महोदया डॉ. कौसलया जी एम.एस.सी, एम. फिल, पी.एच.डी के प्रति मैं अभार प्रकट करती हूँ। जिन्होंने मुझे एम.ए हिन्दी एवं पत्रकारिता में प्रवेश दिलाते हुए इस शोध कार्य को करने का सुअवसर भी दिया। मैं हमारी संकाध्यक्षा डॉ.के.टी.गीता एम.ए, एम.फिल, पी.एच.डी महोदया जी के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने मुझे समय समय पर प्रोत्साहन दिया।

मैं अपनी प्रभारी विभागाध्यक्षा डॉ.जी.शांति जी, असिस्टेंट प्रोफेसर एम.ए, एम. फिल, पी.एच.डी को हार्दिक धन्यवाद देती हूँ, जिनके मार्गदर्शन ने मुझे हर कदम पर प्रोत्साहित किया है।

मैंने यह शोध कार्य डॉ.शशिप्रभा जैन जी प्रोफेसर, एम.ए, पी.एच.डी, पी.जी.डी. टी के सुयोग्य निर्देशन में किया है। इसका पूरा श्रेय उन्हीं को जाता है। उन्होंने काफी सहायता की एवं अपना बहुमूल्य समय प्रदान किया। उनके प्रोत्साहन एवं उचित मार्गदर्शन से ही मैं इस शोध कार्य को सफलता से आगे बढ़ा सकी, जिस के लिए मैं सदैव आभारी हूँ।

हमारी पुस्तकालयाध्यक्षा एवं वहाँ के कर्मचारियों के प्रति मैं आभारी हूँ जिन्होंने पूरे शोध प्रबन्ध के लेखन के लिए उपर्युक्त संदर्भ सामग्री प्रदान कर मेरी सहायता की।

मैं अपने पूज्यनीय माताजी एवं पिताजी के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने पूरे शोध प्रबन्ध लेखन में पूरा मानसिक सहयोग दिया। हमारे विभाग की अध्यापिका प्रोफेसर डॉ.शोभना कोक्काड़न जी को भी हार्दिक धन्यवाद देती हूँ। अंत में मैं सृष्टिकर्ता के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मुझे शारीरिक एवं मानसिक शक्ति प्रदान की जिससे मैं यह शोध कार्य सफलतापूर्वक पूरा कर सकी।

प्राक्कथन

पत्रकारिता आधुनिक युग की लेखन विधाओं में सर्वाधिक जीवन्त एंव प्रभावशाली विघा है। वर्तमान स्थितियों में पत्रकारिता जीवन का अनिवार्य अंग है। समाज का वास्तविक यथार्थ का आईना होने के कारण यह जीवन से सीधा जुड़ा है। पत्रकारिता के क्षेत्र में हिन्दी पत्रकारिता का महम्वपूर्ण स्थान है। पत्रकारिता के अंतर्गत सभी तरह के संचार माध्यम परिणित किये जा सकते हैं। पत्रकारिता मानव की अभिव्यक्ति कौशल का सर्वोत्कृष्ट रूप है। इसी माध्यम से वह प्रकृति के अन्य जीवों की तुलना में कई गुना अधिक गति से विकासमान है। संवाद प्रेषण की कला और संचार शक्ति के मानवीय गुणों का व्यक्त रूप ही पत्रकारिता है। मानव के ज्ञान के परंपरा ने उसकी संचार शक्ति में वृद्धि की।

मेरे इस लधु प्रबंध में पॉच अध्याय हैं। मेरे इस लधु शोध प्रबंध कार्य का मुख्य उद्देश्य पत्रकारिता एंव हिन्दी पत्रकारिता के दायित्वों को समाज के समक्ष रखना। इस लधु शोध प्रबंध के द्वारा इस बात की पुष्टि होती है कि आधुनिक युग में पत्रकारिता और हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियॉ किस प्रकार है? पत्रकारिता एक पवित्र पेशा है और पत्रकार की लेखनी "सत्यं शिवं सुन्दरम" से बॅधी होती है।

मैंने **प्रथम** अध्याय में पत्रकारिता के सामान्य परिचय की चर्चा की है। इसमें पत्रकारिता का अर्थ, परिभाषा, महत्व, स्वरूप, दायित्व, पत्रकारिता में पत्रकार आदि के बारे में भी स्पष्टीकरण दिया है।

दूसरे अध्ययय में पत्र और पत्रकारों का मूल्यांकन, पत्रकारों का वर्गीकरण और पत्रकारिता के विविध रूप के साथ हिन्दी पत्रकारिता और पत्रकार को भी विस्तारित से प्रस्तुत किया गया है।

तीसरे अध्याय में आधुनिक पत्रकारिता के उद्देश्य, आधुनिक पत्रकारिता का वर्गीकरण, पत्रकारिता की आधुनिक विधाएँ, पत्रकारिता के आधुनिक रूझान आदि पर विशेष रूप से चर्चा की है।

चौथे अध्याय में पत्रकार और समाज, हिन्दी भाषा की विशेषताएँ, हिन्दी पत्रकारिता पाठकों की दृष्टि में, तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता की स्थिति और हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियॉ आदि के बारे में विस्तार रूप से विवरण दिया गया है।

पॉचवें अध्याय में मैंने पत्रकारिता की समस्याएँ एवं समाधान को विस्तार रूप से विवरण दिया है और उसी के साथ विभिन्न भाषाओं के पत्रकारों से साक्षात्कार कर उनके सुझावों को भी प्राप्त किया और प्रश्नावली तैयार कर छात्रों और सामान्य जनता से सर्वेक्षण किया।

"अंत भला तो सब भला" इस कथन से मैं पूरी तरह से सहमत हूँ। किसी भी पुस्तक की सफलता का पूरा आनन्द तभी मिलता है जब उसका निष्कर्ष भी अच्छा हो। यह मेरा पहला शोध कार्य है जिसमें जाने अनजाने में त्रुटियॉ हुई हों तो कृप्या उदार भाव से क्षमा करें। इन पॉचों अध्यायों में मैंने उपसंहार में इस सार–भूत निष्कर्ष प्रस्तुत किया है।

मैंने अपने इस लधु शोध प्रबंध कार्य के लिए पत्रकारिता का विषय चुना हैं क्योंकि पत्रकारिता आज का ज्वलंत विषय है। पत्रकारिता जनता के साथ संपर्क जोडनेवाला एक सशक्त माध्यम है। पत्रकारिता के प्रति मेरी विशेष रूची होने के कारण और आज की मॉग पत्रकारिता होने के कारण मुझे पत्रकारिता को अपने विषय के रूप में चुनना अधिक समीचीन लगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि मेरा यह कार्य आगे आनेवाले छात्रों के लिए एक मार्गदर्शन का कार्य करेगा।

पत्रकारिता एवं हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियॉ

अध्याय 1 पत्रकारिता का सामान्य परिचय **पृष्ठ संख्या**

1.1 पत्रकारिता का अर्थ एवं परिभाषा 7

1.2 पत्रकारिता का महत्व 9

1.3 पत्रकारिता का स्वरूप 10

1.4 पत्रकारिता का दायित्व 15

1.5 पत्रकारिता में पत्रकार 16

अध्याय 2 पत्रकार और पत्रकारिता

2.1 पत्र और पत्रकारों का मूल्यांकन 19

2.2 पत्रकारों का वर्गीकरण 21

2.3 पत्रकारिता के विविध रूप 23

2.4 हिन्दी पत्रकारिता और पत्रकार 29

अध्याय 3 आधुनिक युग में पत्रकारिता

3.1 आधुनिक पत्रकारिता के उद्देश्य 33

3.2 आधुनिक पत्रकारिता का वर्गीकरण 36

3.3 पत्रकारिता की आधुनिक विधाएॅ 45

3.4 पत्रकारिता के आधुनिक रूझान 47

अध्याय 4 आधुनिक युग में हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियॉ

4.1 पत्रकार और समाज 53

4.2 हिन्दी भाषा की विशेषताएँ 54

4.3 हिन्दी पत्रकारिता पाठकों की दृष्टि में 59

4.4 तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता की स्थिति 63

4.5 हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियॉ 66

अध्याय 5 पत्रकारिता की समस्याएँ और समाधान

5.1 पत्रकारिता की समस्याएँ 71

5.2 विभिन्न भाषाओं के पत्रकारों से साक्षात्कार 74

(क) प्रश्नावली 79

(ख) सर्वेक्षण का मूल्यांकन 82

6. उपसंहार 85

संदर्भ ग्रंथ सूची 88

पत्रकारिता का सामान्य परिचय

1.1 पत्रकारिता का अर्थ एंव परिभाषा

भूमिका

मानव जीवन में पत्रकारिता अपने महत्वपूर्ण स्थान और उच्च आदर्शो के पालन के लिए सदैव अपनी पहचान बनाती आ रही है। भारत में पत्रकारिता का इतिहास लगभग दो सौ वर्ष का है। आज "पत्रकारिता" शब्द हमारे लिए एक नया शब्द नही है क्योंकि होते ही हमें अखबार की आवश्यकता होती है, फिर सारे दिन रेडियो, दूरदर्शन, डंटरनेट एंव सोशियल मीडिया के माध्यम से समाचार प्राप्त करते रहते है। इतना ही नहीं इन सोशल मीडिया के माध्यम से ही हम अन्य कई प्रकार की जानकारियों से परिचित होते हैं। उसके साथ विज्ञापन ने हमें उपभेक्ता से जोड दिया है। इस प्रकार पत्रकारिता के विभिन्न माध्यम जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएॅ, रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट तथा सोशल मीडिया ने व्यक्ति से लेकर समूह तक सारे विश्व को एकसूत्र में बांध दिया है। पत्रकारिता का अर्थ और परिभाषा कुछ इस प्रकार है–

पत्रकारिता का अर्थ

पत्रकारिता "व्यक्तिगत चोर नेत्र है" जो छिपे हुए समाचारों की तहत तक जाकर उन्हें समाज के सामने लाती है। पत्रकारिता अभिव्यक्ति का संपूर्ण विज्ञान है।

पत्रकारिता समाज के विचारों का प्रतिबिंब है और साहित्य की संवाहिका है, जो समाज और साहित्य के इतिहास में अपना विशेष स्थान बनाकर उसका निमार्ण करती है। सच तो यह है कि पत्रकारिता समाचारों का सम्प्रेषक है। समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन कला एवं पत्र का व्यवसायिक संघठन पत्रकारिता है। पत्रकारिता राजि–रोज लिखा जानेवाला इतिहास है। पत्रकारिता सामाजिक गतिविधियों का दर्पण है। इसके माध्यम से हम अनेक जानकारियॉ प्राप्त कर सकते है। पत्रकारिता के बारे में भारतीय विद्वानों की मान्यताओं के विपरीत "पत्रकारिता" शब्द के उद्‌भव का देखा जाए तो इसका अर्थ और अधिक सपष्ट हो जाता है।

पत्रकारिता अंग्रेज़ी के जर्नलिज्म (Journalism) शब्द का हिन्दी रूपातंरण है जो कि जर्नल (Journal) से बना है। जर्नल शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के ड्यूरनलिस (Diurnalis) शब्द से मानी जाती है। ड्यूरनलिस शब्द का अर्थ है दैनिक सूचना। पत्रकारिता आधुनिक युग का लेखन विधाओं में सर्वाधिक जींवत एंव प्रभावशली विधा है। आज पत्रकारिता का क्षेत्र इतना विस्तृत हो चुका है कि विभिन्न विषयों के लिए विशेष संवादाता नियुक्त किए जाते हैं और वे अपने–अपने क्षेत्रों की घटनाओं का विशलेषण, विवेचन और विवरण समाचार पत्रों के माध्यम से जनता तक पहुॅचाते हैं। वास्तव में पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में सूचनाऍ और जानकारियॉ एकत्र करते हैं जिसे स्वयं के प्रयासों से भी जान नहीं सकते। वर्तमान स्थिति में पत्रकारिता जीवन का अभिन्न अंग बन गया है।

परिभाषा

विभिन्न सामाजिक विधाओं के समान ही पत्रकारिता के आरम्भ में विषय और व्यवसाय की अलग – अलग स्थितियॉ रही हैं। पत्रकार भी साहित्यकार के समान जन्मजात होता है। अनेक विद्वानों ने अपने – अपने ढंग से पत्रकारिता को कुछ इस प्रकार परिभाषित किया है –

1. "पत्रकारिता कला भी है और वृत्ति भी और जनसेवा भी, जब तक कोई पत्रकार यह नहीं समझता कि उसका दायित्व अपने पत्र से समाज जागरण करना और उसे शिक्षित करना है तब उसे जितना भी प्रशिक्षण दिया जाए वह पत्रकार नहीं बन सकता"

   – विल्होम स्टीड

2. "पत्रकारिता ज्ञान और विचार को शब्दों एंव चित्र के माध्यम से दूसरों तक पहुॅचाने की पत्र कला है।"

   – रामकृष्ण रधुनाथ

3. "सामाजिक ज्ञान और समाज सेवा का व्यवसाय ही पत्रकारिता है।"

   – सी. जी. मूलर

4. "पत्रकारिता ज्ञान और विचार को शब्दों एवं चित्रों के माध्यम से दूसरों तक पहुॅचाने की पत्र कला है।"

   – रामकृष्ण रघुनाथ

1. The objectives of Journalism is service.

– M.K.Gandhi

2. “Journalism: The occupation of conducting a news medium, including publishing, editing, writing or broadcasting.”**1**

– Websters Dictionary

3. “The press is one of the vital organs of modern life especially in a democracy. The press must be respected.”**2**

– J.L.Nehru

1.2 पत्रकारिता का महत्व

पत्रकारिता जन भावना की अभिव्यक्ति, सद्भावों की उद्भूति और नैतिकता की पीठिका है। पत्रकारिता शब्द के अर्थ और विभिन्न विद्वानों द्वारा निर्धारित उसकी परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि पत्रकारिता विधा एंव व्यवसाय के रूप में वर्तमान समाज व्यवसथा में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी है। जन सामान्य हो या विशेष व्यावहारिक जीवन में कदम – कदम पर पत्रकारिता की आवश्यकता महसूस करते हैं। पत्रकारिता का क्षेत्र एंव परिधि बहुत व्यापक है। उसके किसी सीमा में बांधा नहीं जा सकता। पत्रकारिता जन भावना की अभिव्यक्ति, सद्भावों की उद्भूति और नैतिकता की पीठिका है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी होने के साथ ही जीवन में अभूतपूर्व क्रान्ति की अग्रदूतिका है।

पत्रकारिता का सामाजिक महत्व

- पत्रकारिता की सार्थकता।
- सामाजिक जनमत को प्रतिबिम्बित करना।
- समाज को उचित दिशा निर्देश देना।
- समाज को मनोरंजन सामग्री देना।

1.3 पत्रकारिता का स्वरूप

पत्रकारिता की परिभाषाओं से जन चेतना की मुखरता में उसके दायित्व का बोध हो जाता है, यह जानना भी स्वाभाविक हो जाता है, कि उपयुक्त सिद्धॉतों की पूर्ति पत्रकारिता द्वारा कैसे हो ? या फिर पत्रकारिता का स्वरूप किस रूप में सामने आए जिसके द्वारा वह अपने लक्ष्य तक पहुॅचे। इस दिशा में पत्रकारिता के कुछ शाश्वत धर्म ही उसके स्वरूप को उद्घाटित कर सकते हैं, जिन्हें इस क्रम में रखा जा सकता है –

1. **सामाजिक चेतना का दर्पण –** पत्रकारिता सामाजिक चेतना का आर्दश दर्पण है। वस्तुत: प्रत्येक मानव अपने समाज का अधिक से अधिक विवरण प्राप्त करना चाहता है और उसी से अपनी दृष्टि का निर्माण करता है। अत: इसे जानने का सबसे सुगम साधन पत्रकारिता है।

2. **सूक्ष्म परिवेश –** मानव समाज परिवर्तनशील रहता है। वैज्ञानिक विकास के साथ मानव जीवन में जटिलताएॅ आती जाती है और इसके परिणामस्वरूप

कभी–कभी ऐसा घटनाएँ होती है जिनमें हम घटना होने के पूर्णतया अनवगत रहते हैं। वे घटनाएँ मनुष्य को किंकर्तत्य विमूढ कर देती है परन्तु पत्रकारिता के द्वारा इनका विवरण जानकर हमें दृढता मिलती है।

3. **नीर–क्षीर विवेक –** पत्रकारिता में तटस्थता अनिवार्य तत्व है। यदि पत्रकारिता नीर–क्षीर विवेक दृष्टि का परिचय न देकर पक्षपातपूर्ण या प्रतिबद्ध विवेचन कर दे तो इससे समाज की धारणा भी वैसी ही बनने लगती है, जो धोतक हो जाते हैं। अत: सच्ची पत्रकारिता का स्वरूप नीर–क्षीर विवेकपूर्ण होना चाहिए।

4. **मूल्यों की नियामिका** – राष्ट्र अथवा समाज में व्याप्त असंतोष, आक्रोष, आक्रोश या विद्रोह का नियमन करके पत्रकारिता समाज को दिशा होती है। दिन – प्रतिदिन की घटनाओं को पाठक तक पहुँचकर पत्रकारिता ही मानवीय संवेदना को उभारता है।

5. **परिवेश से संपर्क** – पत्रकारिता का जुडाव युगीन परिवेश और देशकाल की सीमाओं से बन रहता है। हम पत्रकारिता क द्वारा देश और उसके साथ अंतराष्ट्रीय धटनाचक्र से जुडे रहते हैं। आज मानव राष्ट्र की प्रगति ममें रूचि लेने लगा है। बात चाहे अणु विकास की हो या अंतरिक्ष अभियान की उससे राष्ट्रीय अस्मिता या गौरव का बोध का सहज अनुभव पत्रिकारिता के माध्यम से ही करने में हम सक्षम होते हैं। इस प्रकार पत्रकारिता हमें परिवेश से जोड़े रहती है।

6. **वैविध्यपूर्ण व्यापक क्षेत्र** – पत्रकारिता का क्षेत्र बहुत व्यापक और वैविध्यपूर्ण होता है। जीवन का कोई ऐसा पक्ष नहीं है जो पत्रकारिता से अछूता हो। पत्रकारिता केवल राजनीति अथवा समाज तक ही नहीं वरन् कला संस्कृति, शिक्षा, अर्थ, वाणिज्य, खेल तथा मनोरंजन के अन्य क्षेत्रों तक व्यापक रहता है।

7. **समाज की सुधारवादी दृष्टि** – पत्रकारिता का कार्य समाज के लिए चिकित्सक की भांति होता है। वास्तव में पत्रकारिता के द्वारा गति, स्थिति, प्रगति, उत्थान, पतन आदि का प्रशिक्षण परीक्षण होता है और उसमें हो रहे प्रत्येक परिवर्तन पर पत्रकार की ऑख लगी रहती है।

8. **संप्रेषण का माध्यम** – पत्रकारिता एक संप्रेषण माध्यम है। इंटरनेट और अंतरिक्ष तक पत्रकारिता की पहुॅच इस बात का प्रमाण है कि मानव की संप्रेषनीयता में ही उसे इस खोज के लिए प्रेरित किया और वह विस्तार संप्रेषण की भावना के अंतर्गत अपने विचारों से अधिक से अधिक लोगों तक पहुचाने के लिए सचेष्ट है।

9. **विशिष्ट उद्देश्य** – पत्रकारिता विशिष्ट लक्ष्य के लिए समर्पित होती है। देखा जाए तो पत्रकार बनना ही एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए है। "समग्रता जिस प्रकार जनहित के लिए पत्रकारिता समर्पित रहती है, उसे देखते हुए यह कहा जा सकता है कि पत्रकारिता एक विशिष्ट उद्देश्य है– जीवन का, समाज का और व्यक्ति का।"**3**

10. **प्रेरणा और जागरुकता** – पत्रकारिता राष्ट्र का प्रेरणास्त्रोत होती है। सामाजिक जागरुकता की दिशा में पत्रकारिता से अधिक प्रभावी कोई साधन नहीं है। समाज की दुर्बलताओं, कुरीतियों, अंधविश्वासों के विरुद्ध समाज को जागरुक बनाने में भी पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

11. **आधुनिक जीवन की दिशा–निर्देशिका** – पत्रकारिता वर्तमान जीवन का आधार है। मानव के अति व्यस्त आधुनिक जीवन में अपने पारिवारिक परिवेश से जुडने का समय भी नहीं रह गया है जिसके कारण वह संपूर्ण अंतराष्ट्रीय घटना चक्र संपन्न हो जाता है। पत्रकारिता स्वयं में एक विज्ञापन है और विज्ञापन एंव प्रजातंत्र के इस युग में पूरा राष्ट्र पत्रकारिता के महत्व को समझने लगा है।

समग्रतः पत्रकारिता का स्वरूप अंत्यत व्यापक है। पत्रकारिता का स्वरूप व्यापक, अकर्षक एवं सुरूचीपूर्ण है और शायद इसी रूप की परिकल्पना करते हुए एडिसन ने कहा था, "पत्रकार कला से अधिक विमोहक, रसमयी तथा सर्वतोमुखी कोई दूसरी बात मुझे दिखाई नहीं देती। एक स्थान पर बैठकर प्रतिदिन सहस्त्रों नर नारियों तक पहुॅचाना, उनसे अपनी मन की बात कहना, उन्हें सलाह देना तथा शिक्षण एवं मनोरंजन करना और जरूरत पढ़ने पर चिढ़ा देना कितना आश्चर्यजनक है।" **4**

पत्रकारिता का शश्वत धर्म

1.4 पत्रकारिता का दायित्व

"मेरी राय में पत्रकार बनने के पूर्व आदमी को समझ लेना चाहिए कि यह मार्ग त्याग का है, जोड का नहीं। जिस भाई या बहन को भोग–विलास की लालसा हो, वह और धंधा करें रहम करें राम इस रोजगार पर। मेरा आदर्श पत्रकार ईमानदार पादरी, पीर, परमहंस सा नजर आता है। व्यक्तिगत सुख–दुख के बहुत ऊपर, किसी भी भीड में जिसे आसानी से पहचाना जा सके।"**5**

समाज के विस्तृत क्षेत्र के सन्दर्भ में पत्रकारिता के निम्नलिखित दायित्व है –

1. सामाजिक जनमत की अभिव्यक्ति देना।
2. समाज को उचित दिशा निर्देशित करना।
3. जन–जन को स्वस्थ मनोरंजन की सामग्री देना।
4. सामाजिक कुरीतियों (बाल विवाह, दहेज, बहु हत्या, अंधविश्वास) को मिटाने की दिशा में प्रभावी कदम उठाना।
5. धार्मिक और सांस्कृतिक पक्षों का दो टूक विवेचन करना।
6. सामान्य जन को उनकी ही भाषा में उनके अधिकारों को समझाना।
7. उद्योग जगत् की उपलब्धियों को साधारण जनता तक पहुॅचाना।
8. कृषि जगत् की उपलब्धियों को साधारण जनता तक पहुॅचाना।
9. सरकारी नीतियों का विश्लेषण एवं प्रसारण।
10. महिला जगत्, बाल जगत्, क्रीडा जगत्, चलचित्र जगत् के विविध कार्यक्रमों का प्रसार।
11. स्वास्थ जगत्, परिवार – कल्यान के प्रति नागरिकों को सचेत करना।
12. शिक्षा, शिक्षक, विधार्थी वर्ग को समीचीन मार्ग बतलाना।
13. सर्वधर्म समभव एंव सौहार्द भाव को पुष्ट करना।
14. संकटकालीन परिस्थितियों में राष्ट्र का मनोबल बढ़ाना।

इस प्रकार अन्याय का प्रतिरोध कर मित्रविहोन लोगों को मित्रवत् मार्ग दिखाना ही पत्रकारिता है। समाज में मानव–मूल्यों की स्थापना के साथ जन–जीवन को विकासोन्मुख बनाना पत्रकारिता का दायित्व है।

1.5 पत्रकार और पत्रकारिता

पत्रकार राष्ट्र और समाज का प्रहरी होता है। वह अपनी बुद्धि कला और निष्टा से अतीत के ज्ञान, वर्तमान की जानकारी समाज को देता है और सुखी व समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ने का मार्ग प्रशस्त करता है। "एक आदर्श पत्रकार नित नए ज्ञान और अनुभव की तलाश में रहता है–स्वयं परेशानी झेलते हुए समाज के हित की कल्पना करना ही उसका ध्येय होता है"। जाति, धर्म और वर्ग की सीमाओं से मुक्त होकर मानव मात्र का कल्याण ही पत्रकार का सपना होता है। निजी पारिवारिक एवं सामाजिक जीवन से जुड़े उसके तमाम सपने एक ऐसे बन्दु पर केन्द्रित हो जाते हैं जहॉ उसे व्यावसायिक उत्तरदायित्व के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखाई देता।एक और वे ईमानदार पादरी, पीर और परमहंस की तरह भीड़ में अलग से पहचाना जा सकता है। दूसरी ओर सच्चा पत्रकार पूरी तरह उस समुदाय से घुला–मिला होता है जिसकी आशाओं और मॉगों को वह व्यक्त करता है और जिसका वह बिना चुने ही प्रतिनिधित्व करता है। "किसी पत्र का संपादन करके या उसके लिए कुछ लिखकर जो अपनी जीविका चलाता है उसे पत्रकार कहतें है। "पत्रकार विचार, भावना विश्लेषण, क्षमतायुक्ति, बुद्धजीवी है जो लोकमानस में डूबता है, विविध धटनाओं से उन्नमथित होता है तथा अपनी विवेचना शक्ति के बल पर जन–मानस को सशक्त वाणी देता है। इसलिए नरेश, शिक्षकों का शिक्षक, लोकनायक, नेताओं का नेता, लोक गुरु के

नाम से पुकारा जाता है। सामान्यतः समाचारों के संकलन, लेखन तथा उन पर विचारों को प्रकाशित करनेवाला पत्रकार कहा जाता है। पत्रकार समाचार पत्र कार्यालय के संपादकीय विभाग का क्लर्क, मुहार्रिर या पैशकार होता है। पत्रकार अध्ययनशीलता बहुश्रुत बुद्धिजीवी है जो समाज का कुशल चितेरा होता है, विविध समस्याओं पर चिन्तन करता है और उसे प्रभावकारी ढ़ग से लिपिबद्ध करता है।

समाज में नये आचार–विचार व्यावहार को गति देना के लिए चौतरफा प्रयास आवश्यक होगा। पत्रकारिता लोगों तक नये विचारों को पहॅचाने देश को अक्षम बनाए रखना, राष्ट्रीय भावना को मजबूती प्रदान करना, समाजिक तथा आर्थिक बुराईयों का समाधान करना आदि पत्रकारिता के मूल उद्देश्य हैं। इस अध्याय में पत्रकारिता के परिचय के साथ–साथ अर्थ, परिभाषा, उद्देश्य और दायित्व का स्पष्ट विवरण दिया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हिन्दी पत्रकारिता का विकास – एन.सी.पन्त – पृ.सं : 2

2. आधुनिक पत्रकारिता – डॉ. अर्जुन तिवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन – पृ.सं : 1

3. पत्रकारिता सिद्धांत और प्रयोग – डॉ.लक्ष्मीकान्त पाण्डेय – पृ.सं : 7

4. पत्रकारिता सिद्धांत और प्रयोग – पृ.सं : 8

5. पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य – राजकिशोर – पृ.सं : 65

पत्रकार और पत्रकारिता

2.1 पत्र और पत्रकारों का मूल्यांकन

भारत के पत्रों में आदर्शवादिता की कमी नही है इस बात को कोई भी निष्पक्ष आलोचक स्वीकार कर लेगा। पर पत्रों का संचालन कोरे आदर्शवाद से नहीं हो सकता। हम जानते हैं कि पाठक इस वाक्य को पढ़कर भ्रम में पड़ जाएँगे। पत्रकारिता और समाचार पत्रों की तो समस्या ही इसी विरोध में है, और आज अगर हम पत्रकारी को जटिल एंव कठिन कला के रूप में उद्धोषित करते हैं तो उसका कारण भी यही विरोध है। हम यह भी समझते हैं कि पत्रकार का जीवन अगर महान माना जाता है, अगर समाज में उसका आदरणीय स्थान एंव प्रभावशाली पद समझा जाता है, तो उसका आधार भी यही है कि उसे उस विकट कार्य की कड़ी को जोड़े रखना पडता है जिसमें एक नहीं कोई परस्पर विरोधी तत्व मिलकर उसका सृजन किए हुए रहते हैं। पत्रकार का जीवन उसके आदर्शवादिता और व्यावहारिकता के सम्मिश्रण से ही बनता है। उसे अपने जीवन में बार–बार अनुभव करना पड़ता है कि पत्रों का प्राण अगर आदर्शवादिता है तो उस प्राण को स्थायित्व प्रदान करने हेतु उसे संघर्ष में पड़ता है। जिसमें जगत की परिस्थितियों के घात–प्रतिघात के अनुकूल व्यावहारिक मार्ग भी पकड़ना पड़ता है। कल्पना, भावना और आदर्शवाद एंव स्थूल भौतिक जगत की व्यावहारिक स्थिति में बहुधा स्पष्ट पृथकता दिखाई देती है, विरोध का आभास मिलता है, पर इस पृथकता और विरोध में सामंजस्य स्थापित किए बिना जीवन बनाए रखना असंभव हो जाता है। पाठकों की संख्या वृद्धि हेतु पत्र के आदर्श को भूलकर न मात्र मनोरंजन, सनसनी एवं जीवन की क्षुद्र लालसाओं को उत्तेजन प्रदान करने वाली बातों से पत्र के स्तम्भ भरे जाने लगे अपितु पाठकों को तरह–तरह का प्रालोभन देकर

ग्राहक बनने हेतु फुसलाया भी जाने तगा। जनता का पथ प्रदर्शन करना एवं राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय प्रश्नों की गुत्थी सुलझना तो पीछे छूट गया, उसके स्थान पर बिल्कुल उसके विपरीत अपने कुचाल से वे ही, पत्र जनता को पतन एवं भ्रष्टता की ओर ले जाने के कारण बनने लगे। पत्रकारों को अपने रक्त से अभिषिंचित पत्रकार कला की कोमल लतिका को इस भयावने विष से बचाने हेतु यत्न करना पड़ेगा, पर जहॉ यह यत्न करना है वही आज का पत्रकार भली भॉति जानता है कि विज्ञापन से होने वाली आय पत्र के जीवन की रक्तधारा है जिसके सूखकर पथरा जाने पर उसकी मृत्यु भी अवश्य हो जाएगी। पत्रों के पाठक ही उसके ग्राहक होते हैं। किसी व्यवसाय और व्यापार का मोटा और सीधा सरल नियम है कि जो वस्तु ग्राहकों को प्रिय एवं रूचिकार हो वही बाजार में लाई जाए। तभी उसकी खपत होगी और विक्रोता एवं उत्पादक फायदा उठा सकेंगे। समाचार पत्रों के अधिकतर पाठक साधारण श्रेणी के लोग होते हैं। हम देखते है और अनुभव हमें बताता है कि साधारण मनुष्य जीवन की साधारण एवं विशेषकर छोटी बातों में जितना रस लेता है उतना ऊॅचा कल्पना और सिद्धॉत की बातों में नहीं लेता। मानव प्रकृति भी कदाचित उन बातों को सुनने और जानने में स्वाद पाती है जिन्हें आप ओछी कहतें हैं। पत्रकार अपने जीवन में अनुभव करता है कि पत्रकारी अगर एक ओर उसके लिए पेशा है तो दूसरी ओर आदर्श की उत्कृष्ट साधना भी है। वह कलाकार है जो व्यवसायी भी है। विभिन्न स्थितियों में उसे आवश्यकतानुसार उपर्युक्त विभिन्न हैसियतों में काम करना जरूरी होता है और यदा–कदा एक साथ ही सब पदों के कर्तव्य की पूर्ति भी करनी होती है। पत्रकार ऐतिहासिक होने के नाते उन समाचारों को बेचेगा। जनता का पथ–प्रदर्शक होने की हैसियत में घटनाओं पर मत व्यक्त करेगा और अपने पाठकों को वस्तुस्थिति के अनुकूल करने का मार्ग दिखाएगा। पत्रकार को यह प्रतिक्षण स्मरण रखना होता है कि उपर्युक्त कार्य उत्तरदायित्वपूर्ण है, जनता को सत्य और मात्र सत्य संवाद देना है

एवं विशुद्ध जनहित की दृष्टि से अपना मत प्रकट करना है। इस कार्य में उसके लिए न प्रलोभन बादक होना चाहिए, न किसी का स्वार्थ न किसी का भय। वह सत्य का पूजारी है और उस मार्ग में जो भी बाधक हो उसका सामना करने हेतु बाध्य होगा फिर बाधा देनेवाला कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो। इस हैसियत में पत्रकार का पेशा उसके लिए तपस्या की भॉति पुनीत हो जाता है। इस प्रकार एक बात कहा जाता है कि पत्रकारिता तमाम जनसमस्याओं एवं सवालों से जुडी होती है, समसयाओं को प्रसासन के सम्मुख प्रस्तुत कर उस पर बहस को प्रोत्साहित करती है। समाज जीवन के हर क्षेत्र में आज पत्रकारिता की महत्व स्वीकारी जा रही है। आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, विज्ञान कला सब क्षेत्र पत्रकारिता के दायरे में हैं।

2.2 पत्रकारों का वर्गीकरण

कार्य संपादन की दृष्टि से पत्रकारों को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

1. वेतनभोगी समाचार पत्र कर्मी, पत्रकार।
2. समाचार पत्रों के प्रकाशक संपादन पत्रकार।
3. स्वतंत्र पत्रकार।

1. **वेतनभोगी समाचार पत्र कर्मी, पत्रकार** – वेतनभोगी समाचार पत्र कर्मी, पत्रकारों को मुख्याधार के पत्रकार कहा जा सकता है। राष्ट्रीय एवं अंतर राष्ट्रीय रातनीति, अर्थव्यवस्था, साहित्य सिनेमा, कला, संस्कृति आदि को दिशा देने एवं प्रभावित करने में समर्थ इन पत्रकारों को छोटे–बड़े समाचार पत्रों में निश्चित पदों के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है।

2. **प्रकाशक–संपादक पत्रकार –** इस श्रेणी के पत्रकारों की स्थिति स्वरोजगार योजना अंतर्गत उधम करनेवाले व्यवसायी जैसे होती हैं। वह स्वयं लेखक, संववादाता, संपादक और प्रकाशक होते है। ऐसे पत्रकार अधिक मुखर और प्रतिबद्ध होते है।

3. **स्वतंत्र पत्रकार –** समाज में पत्रकार और पत्रकारिता के प्रति जो समझ होती है वह स्वतंत्र पत्रकार ही बनाते है। चिंतन, मनन, अध्ययन और लेखन के बावजूद छोटे–बड़े जरूरतों के जूझते रहना, फकामस्ती दुरसाहस और निर्भीकता स्वतंत्र पत्रकार की विशेषताॅए होती है।

स्वतंत्र पत्रकारिता की सबसे महत्वपूर्ण विधाओं में से है। कोई भी व्यक्ति जो स्वतंत्र पत्रकार के तौर पर काम करना चाहता है और अपनी सचनात्मक क्षमता के जरिए आगे बढता है तो उसके लिए इस विधा में अपार संभावनाॅए है। स्वतंत्र पत्रकारिता अपनी इच्छा से अथवा समाचार पत्र लेख समाचार उसे देते है, जिसका उन्हें परिश्रममिक मिलता है। "स्वतंत्र पत्रकार प्रायः राजनैतिक संगठनों से जुडे या राजनैतिक विचारधाराओं के प्रति झुकाव रखते हैं। विभिन्न विषयों पर वैचारिक व विश्लेषणात्मक लेख लिखने वालों में अधिकतर स्वतंत्र पत्रकार होते है।"**1** आधुनिक पत्रकारिता में सबसे चुनौतिपूर्ण स्वतंत्र पत्रकार के रूप में कार्य करना है। कदम–कदम पर निराशा और उतसाह का द्वन्द्व का स्वतंत्र पत्रकार के जीवन का अभिन्न अंग है।

2.3 पत्रकारिता के विविध रूप

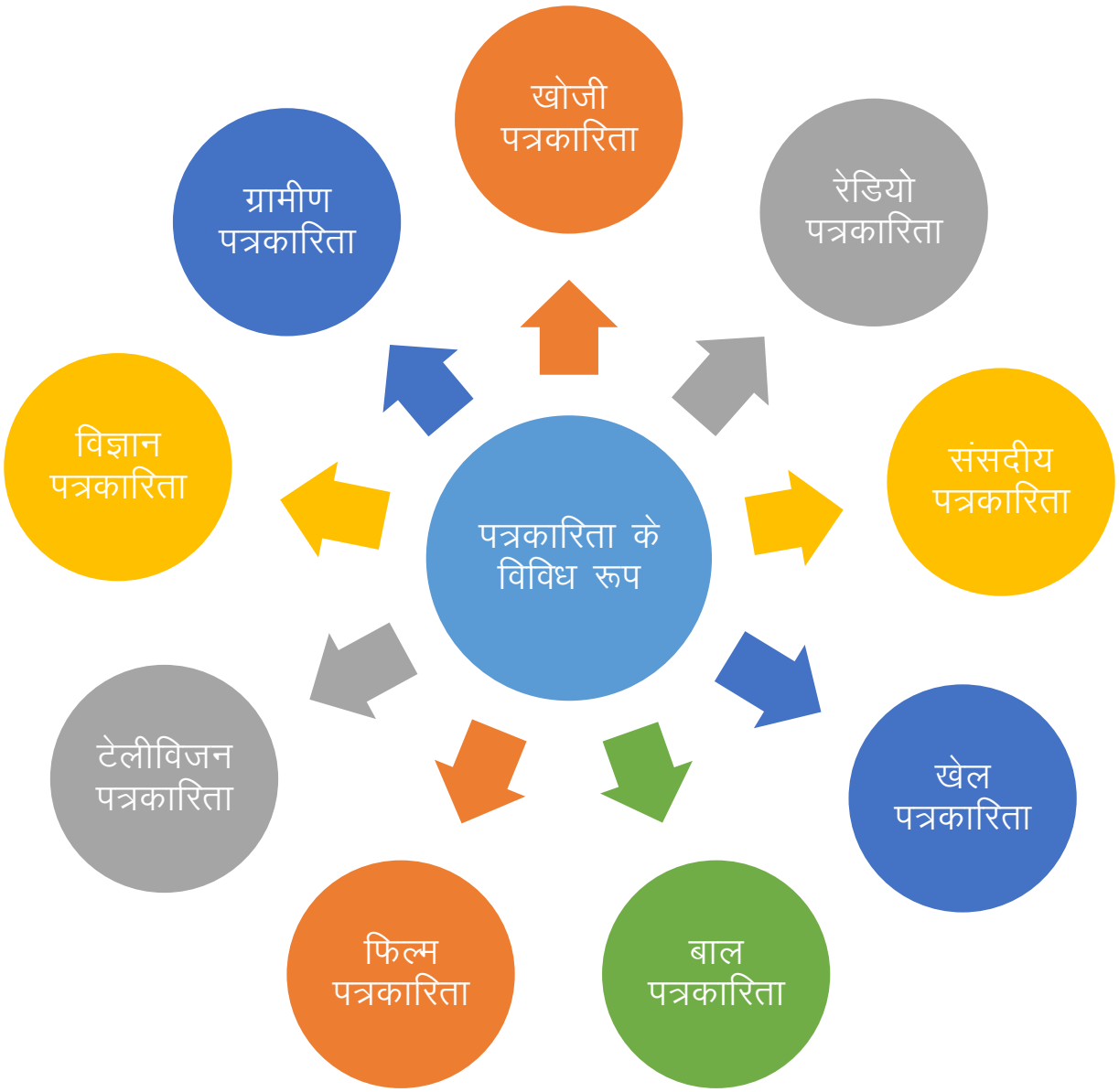

- **ग्रामीण पत्रकारिता [Rural journalism]**

अपना देश गॉवों का देश है। सुदूर गॉवों में नयी चेतना और वैज्ञानिक विकास के स्वर को पत्रों द्वारा ही पहुॅचाया जा सकता है। कृषि पत्रकारिता के अन्तरगत् मृदा कृषि रसायन, कृषि पत्रकारिता अर्थशास्त्र, कीट नाशक औषधि, शारीरिकी और शस्त्र विज्ञापन का अध्ययन होता है। डॉ.मदनमोहन गुप्त ने ग्रामीण पत्रकारिता की परिभाषा देते हुए लिखा है– "जिन समाचार पत्रों में 40 प्रतिशत से ज्यादा सामग्री गॉवों के बारे में कृषि, पशुपालन, बीज, कीटनाशक, सहकारिता आदि विषयों पर होगी, उन्ही पत्रों को ग्रामीण पत्र माना जाएगा।"**2**

- **खोजी पत्रकारिता [Investigative Journalism]**

जहॉ कोई व्यक्ति या अधिकारी को कोई तथ्य अनुद्धाटित लगे वहीं खोजी पत्रकारिता प्रारम्भ हो जाती है। उस समाचार या तथ्य को प्रकाश में लाने के लिए पत्रकार तत्पर हो जाता है। अमेरिका का 'वाटरगेट काण्ड' इस काण्ड के कारण सत्ता परिवर्तन के बाद खोजी पत्रकारिता को विशेष प्रोत्साहन तथा मान्यता मिली। भारत में भी तहलका द्वारा ऑपरेशन कोबरा तथा इसी तरह के तमाम स्टिंग ऑपरेशन इसी तरह की पत्रकारिता के जाते–जागते उदाहरण हैं। यदि खोजी पत्रकारिता सही उद्देश्यों से अनुप्राणित होकर ही रह जाए तो यह समाज और राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी सेवा हो सकती है। यदि चरित्र–तथा किसी व्यक्ति या संस्था को अपमानित या बदनाम करने की नीयत से ऐसी पत्रकारिता की जाएगी तो वह 'पीत पत्रकारिता' की श्रेणी में आ जाती है। खोजी पत्रकारिता का मूल उद्देश्य समाजिक–राजनैतिक जीवन में शुद्ध होना चाहिए।

- **खेल पत्रकारिता [Sports journalism]**

आजकल सभी पत्रों में विविध खेलों से संबंध समाचार छपते हैं। खेलों के संबंध में अग्रिम (Advance) और चल (Running) दो प्रकार के संवाद लिखे जाते हैं। खेल–खिलाडी, क्रिकेट सम्राट, खेल युग आदि अनेक पत्रिकाओं ने खेल पत्रकारिता को आगे बढ़ाया है। आज खेल पत्रकारिता इतनी आगे बढ चुकी है कि समाचार पत्र में खेल समाचार अलग से छापे जाते है।

- **बाल पत्रकारिता [Child Journalism]**

बालक देश के दर्पण होते हैं। वे राष्ट्र की मुस्कुराहट हैं। बालक मनोविज्ञान के मूल हैं। वे ही शिक्षक की प्रयोगशाला हैं। बालको में वर्तमान करवटें लेता है और भविष्य के बीज उसी में बोये जा सकते हैं। बच्चों में अनन्त जिज्ञासा होती है, वे दुनिया के धर विषय के हर तथ्य को जानने हेतु ललायित रहते हैं। उनकी जिज्ञासा की शांति के लिए रंग–बिरंगे, मनोरंजक रूप में उन्ही की भाषा में पत्र–पत्रिकॉए निकल रही हैं। बालोपयोगी रचनाओं के चयन रंगीन चित्रों के सम्पादन, कार्टून–कामिक्स के द्वारा बाल पत्रों को आकर्षक बनाया जा सकता है।

- **संसदीय पत्रकारिता [Parliament Journalism]**

संसद एंव विधान–मंडल, समाचार पत्रों हेतु समाचारों के मुख्य स्त्रोत हैं। इन सदनों की कार्यवाही के दौरान समाचार पत्रों के पृष्ठ संसदीय समाचारों से भरे रहते है। संसदीय कार्यवाही की रिर्पोटिंग हेतु विशेष दक्षता और सावधानी की जरूरत है। इनसे संबंधि कानूनों एंव संसदीय विशेषाधिकारों की जानकारी होना हर पत्रकार हेतु आवश्यक है।

- **फिल्म पत्रकारिता [Film Journalism]**

फिल्मों से हमारा समाज, आज काफी प्रभावित है। अतः हमारी पत्रकारिता भी फिल्म से अछूती कैसे रह सकती है? फिल्मों की समीक्षा, फिल्मी कलाकारों के साक्षात्कार, उनकी गतिविधियॉ तथा फिल्मों पर समीक्षात्मक लेख आदि फिल्मी पत्रेारिता के प्रमुख पहलू हैं। इस समय हिन्दी तथा अग्रेज़ी में कई फिल्मी पत्रिकाएॅ प्रकाशित हो रही जिनकी पाठक संख्या भी काफी है।

- **रेडियो पत्रकारिता [Radio Journalism]**

रेडियो पत्रकारिता की दृष्टि से आकाशवाणी के वे कार्यक्रम महत्वपूर्ण है जिनमें समाचार भी शामिल होता है आकाशवाणी हेतु समाचार तैयार करने का मुख्य दायित्व समाचार सेवा प्रभाग पर होता है। समाचारों के अतिरिक्त सामयिकी, जिले या राज्य की चिट्ठी, रेडियो पत्रकारिता की सीमा में आते हैं।

- **विज्ञान पत्रकारिता [Science Journalism]**

हमारा दैनिक जीवन पर विज्ञान का गहरा प्रभाव है। अतः जनसामान्य की विज्ञान में रूची होना स्वाभाविक ही है। विज्ञान संम्बन्धी खेज एवं विज्ञान जगत् की हलचल विज्ञान पत्रकारिता द्वारा ही आम पाठक तक पहॅच सकती है। इसके लिए आवश्यक है कि पत्रकार विज्ञान जैसे तकनीक तथा गम्भीर विषय को सरल, सुबोध ढ़ंग से पाठकों तक पहुॅचा सके।

• फोटो पत्रकारिता [Photo Journalism]

सचित्र विवरण युग की मॉग है। फोटो पत्रकार समाचारों से सम्बन्धित चित्र लेते हैं। वैज्ञानिक उपकरणों, पशुओं, ऐतिहासिक भवनों, प्राकृतिक दृश्यों, समारोहों तथा घटनाओं के स्थल इनके क्षेत्र हैं।

• पीत पत्रकारिता [Yellow Journalism]

राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने पत्रकारिता के तीन मूल उद्देश्य बताए थे –

1. पत्रकारिता का महला उद्देश्य जनता की इच्छाओं और विचारों को समझना तथा उन्हें व्यक्त करना है।
2. दूारा उद्देश्य जनता की वांछनीय भावनाओं को जागृत करना, तथा
3. तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्भीकतापूर्पक प्रकट करना है।

पत्रकारिता जगत में पीत पत्रकारिता के उदय के संबंध में श्री मिश्र का मत है कि "पीत पत्रकारिता का चलन पत्रकारिता में ज्यादातर आपातकाल के बाद हुआ। प्रेस की स्वतंत्रता को कैद करने के बाद जब उसे दूसरी आज़ादी मिली तो आपातकाल के तरह–तरह में आए। हालांकि यह प्रकाशन की ज्यादातियों का खुला चिट्ठा था, लेकिन उन्हीं शासकों ने इसे पीत पत्रकारिता का नाम देना शुरू कर दिया। हालांकि पीत पत्रकारिता भंडाफोड़ पत्रकारिता को एक रूप है।"**3**

2.4 हिन्दी पत्रकारिता और पत्रकार

" किसी पत्र का संपादन करके या उसके लिए कुछ लिखकर जो अपनी जीविका चलता है उसे पत्रकार कहते है। "

टी.एच.स्कॉट के अनुसार – " पत्रकार वह व्यक्ति है जो थोड़े–थोड़े समय के अंतर पर प्रकाशित अपनी रचनाओं से जनमत को एक निश्चित दिशा में प्रभावित करना चाहता है। "**4**

नित्य नूतन समाचारों का प्रेषक, उनका समीक्षक तथा संपादक ही पत्रकार है। कुछ लोगों ने समाचार पत्र और पत्रिकाओं को बनाने में सहयोगी व्यक्ति को पत्रकार कहा है। प्रश्न यह करने वाला तथा छपने वाला भी पत्रकार कहा जाएगा। पत्रकार–पत्रों के संवाद, अग्रलेख स्तम्भ, विशेष लेख, विज्ञापन–व्यवस्था आदि से संबंध व्यक्ति होता है। समाचारों के संकलन, लेखन संपादन और पत्र–पत्रिकाओं की अन्य सामग्रियों को प्रकाशनार्थ तैयार करने वाला ही पत्रकार है।

पत्रकार विचार, भावना विशलेषण, क्षमतायुक्ति, बुद्धजीवी है जो लोकमानस में डूबता है, विविध घटनाओं से उन्मयित होता है तथा अपनी विवेचना शक्ति के बल पर जन–मानस को सशक्त वाणी देता है।

पत्रकार अध्ययनशील बहुश्रुत बुद्धिजीवी है जो समाज का कुशल चितेरा होता है, विविध समस्याओं पर प्रभावकारी ढंग से लिपिबद्ध करता है। संवादाता, विशेष संवादाता आदि सभी पत्रकार कहलाते है जो संसारमें अपनी ऑखों को सदैव खुला रखते है। जिनके कान कभी बंद नहीं होते जो समय पर और वे सभी परिवर्तन को प्रतिबिम्बित करने में दक्ष हों। "विकेम स्टीड पे पत्रकार की परिभाषा स्पष्ट करते हुए

लिखा है– आदर्श पत्रकार वह है जो प्राचीन ज्ञान, आधुनिक दशन, कला साहित्य विज्ञान तकनीकी, अपने समय से पहले के इतिहास और आर्थिक, सामाजिक व राजनीति के तत्वों का ज्ञाता हो, उन्हें बोधगम्य करके हृदयों में सजोकर रखने में समर्थ हो।"**5**

पत्रकार के दस धर्म –

- अपने पत्र के सुनाम पर गर्व कीजिए। जोश के साथ अपना उत्साह दिखलाइए। पर व्यर्थ का धमण्ड़ मत कीजिए।
- पत्रकारिता में जड़ता मृत्युवत् और एक ही एक रट मृत्यु है।
- अवसर न खोइए, बहुज्ञानी बनिए। नवीनता प्रदर्शन से मत चूकिए।
- व्यक्ति से बड़ा समाज है। सरकार से बड़ा देश है। मनुष्य मरण्शील है, संस्था और सिद्धांत अमर है।
- शत्रु और मित्र दोनों बनाए, मित्र ऐसे हो आप से आदार प्राप्त करें और शत्रु ऐसे हो, जिनसे आप द्वेषण कर सके।
- आर्थिक और साहित्यिक क्षेत्रों में आक्रमण का सामना आक्रमण से करिए। शांति से रहना हो तो अपनी रक्षा करने के लिए हमेशा तैयार रहिए।
- तलवार और पैसा दोनों कलम के दुशमन है। आवश्यकता पड़े तो सम्मान रक्षा के लिए जीवन और धन की भी बलि दीजिए।
- दृढ़ रहिए पर हठी नहीं। परिवर्तनीय बनिए पर कमजोर नहीं। उदार बनिए पर हाथ बिलकुल ढ़ीला मत छोडिए।

- स्पष्टवादी सगर्व सचेष्ट और स्फूर्तिमान रहिए, तभी आपका सम्मान होगा। कमजोरी परलोक के लिए अच्छी है, नही ंतो नपुंसकता।
- जो कुछ छपा हो, सबकी जिम्मेदारी लीजिए। व्यर्थ दोषारोपण पाप है। प्रतिष्ठिा की हानि करने वाली चीज़ न छपिए, धूस लेना पाप है।

पत्रकारिता ऐसा विष्य है, जिसका क्षेत्र और स्वरूप अत्यंत व्यापक है। जीवन का कोई भी ऐसा हिस्सा नहीं है जो पत्रकारिता की पहुॅच से दूर हो। जन–जन की आह और संवेदना की गहरी पकड़ पत्रकारिता रखती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा – इन्द्र चन्द्र रजवार – पृ.सं : 137

2. हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप – डॉ.गोविन्द प्रसाद – पृ.सं : 8

3. हिन्दी पत्रकारिताः दूरदर्शन और टेलिफिल्में – सविता चड्ढ़ा – पृ.सं : 1

4. हिन्दी पत्रकारिता का स्परूप – डॉ.गोविन्द प्रसाद – पृ.सं : 143

5. आधुनिक पत्रकारिता का स्वरूप – इन्द्र चन्द्र रजवार – पृ.सं : 133

3. आधुनिक पत्रकारिता

सूचना एंव प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग में पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में निर्णायक भूमिका का निर्वाह कर रही है। भौतिकवादी जीवन पद्धति के चलते जहॉ मनुष्य पहले की तुलना में अधिक व्यस्त रहने लगा है, वही सामाजिक गतिविधियों और घटनाओं के बारे में जानने की जिज्ञासा ने उसे सजग बना दिया है। वैश्वीकरण के कारण वह आज उन सभी धटनाओं और प्रवृत्तियों के बारे में जानना चाहता है उसे व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक रूप से प्रभावित करती है। राजनीति, अर्थव्यवस्था, खेल, साहित्य, वैज्ञानिक अनुसंधान, धर्म, दर्शन, कला, संस्कृति, सिनेमा आदि सभी मानवीय जिज्ञासा के अनुरूप पत्रकारिता के विषय क्षेत्र का तो विस्तार हुआ ही है, अध्याधुनिक संचार माध्यमों ने मानवीय जिज्ञासा को शांत करते हुए उसके ज्ञान में वृद्धि की है। आधुनिक पत्रकारिता मुद्रित समाचार पत्रों एवं पत्रकारिताओं तक सीमित नहीं है। रेडियो, टेलिविजन एंव इंटरनेट जनसंचार के रूप में पत्रकारिता के अंग बन गए हैं। इन माध्यमों से दुनिया के किसी भी हिस्से में घटित घटना की जानकारी तत्काल हजारों मील दूर दुनिया के दूसरे हिससे में जाती है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो रेडियो एवं टेलीविजन के माध्यम से दुनिया के किसी भी हिस्से की घटना का जीवंत विवरण कहीं भी सुन , देख सकते है। इससे सूचनाओं, समाचारों और विचारों का दायरा भी बदा है। मनुष्य आज सिर्फ उन्ही चीज़ों पर दिलचस्पी नहीं लेता जो उससे जुड़ी होती है। आज उसकी जिज्ञासा का क्षेत्र विभिन्न देशों की सत्ता परिवर्तन से लेकर विघटनकारी घटनाओं तक विश्वस्तरीय खेल प्रतिस्पर्धाओं से लेकर भौतिक विपदाओं जैसे भूकंप, बाढ़, सूखा आदि तक बढ़ चला है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमों के विकास के कारण नए युग में प्रवेश कर चुकी है लेकिन यह विषय का एक ही पहलू है।

3.1 आधुनिक पत्रकारिता के उद्देश्य

पत्रकारिता का जन्म और विकास निसंदेह मानव मात्र की स्वतंत्र चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में हुआ। "दमन एवं शोषण का विरोध और मुक्ति की कामना पत्रकारिता के जन्म के समय से उसका प्रमुख उद्देश्य रहा है।"**1** आज भी पत्रकारिता का यह पवित्र उद्देश्य माना जाता है। परन्तु व्यावहारिक एवं तात्कालिक आधार पर पत्रकारिता के विभिन्न उद्देश्य है–

➢ मानव सभ्यता के क्रिया–कलापों का लेखा–जोखा :

पत्रकारिता का आरम्भिक उद्देश्य सूचनाओं का आदान–प्रदान है। मानव समाज में घटित घटनाओं और उसे विभिन्न सामाजिक क्रिया कलापों की जानकारी प्रदान करना प्रत्येक समाचार माध्यम का दायित्व है। मानव समाज एक जटिल ताने–बाने में बुना है। पत्रकारिता मानव समाज द्वारा निर्मित आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक संस्थाओं की गतिविधियों उस ताने–बाने को मूर्त रूप देती है। उनके अपसी संबंध, तर्क–वितर्क, संर्धष, प्रकृतिक एवं मानव निर्मित आपदाएँ, आचार–व्यवहार, विश्वास आदि ऐसी विधाएँ है जिनका उल्लेख समाचार माध्यम सामाजिक बुराईयों को दूर कर अच्छे कार्यो के लिए मार्ग प्रशस्थ करते है।

➢ समाज का दिशा दर्शन :

विकास की गति हमेशा विरोधाभासी होती है। हर स्थिति और घटना से अच्छे–बूरे का संबंध होता है। समाज माध्यम बुराईयों को दूर कर अच्छाई को अपनाने के लिए प्रेरित करते हैं, वे इस तथ्य का खुलासा करते हैं कि समाज में वैमनसयता, संकीर्णता, स्वार्स्थपरता, विद्रोह आदि क्यों हैं। वे इनके मूल तथ्यों को

उजागर परिणमों की विवेचना कर इनसे लडने का तरीका बताते है। इसी कारण कहा जाता है कि एक स्वस्थ पत्रकारिता की निर्णयक भूमिका होती है, क्योंकि स्वस्थ पत्रकारिता ही समाज का दिशा करा सकती है।

➢ सामाजिक जागृति :

प्रत्येक समाचार माध्यम सूचनाओं एवं विषय वस्तु के साथ वैचारिक लेखों का प्रसारण करता है। समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में संपादकीय एवं विश्लेषणात्मक लेखों के प्रकाशन का ध्येय यही है। इन टिप्पणियों और लेखों में लेखक घटना विशेष पर अपने दृष्टिकोण एवं विचार से पठकों को उत्प्रेरित करते हैं। रेडियो टेलीविजन श्रोताओं और दर्शकों को जागरूक करने के लिए परिचर्चाओं एवं साक्षात्कारों का आयोजन करते हैं। इससे जनसामान्य किसी भी घटना पर उससे संबंधित पक्ष सरकार, समाज या व्यक्ति के बारे में अपनी राय बनाता है जो सामाजिक जागरण होती है।

➢ मानवीय मूल्यों का पोषण :

एक व्यावसायिक विधा होने के नाते पत्रकारिता का उद्‌देश्य मानव सभ्यता का उत्तरोत्तर विकास हैं। यही तभी संभव है, जब मानवीय गुणों का पोषण हो, स्वतंत्रता, निर्भयता, सम्यनिष्ठा, समता, सदाचार आदि के प्रसारण से समाचार माध्यम मानवीय गुणों का पोषण करते हैं। अधिकतर समाचार माध्यम अपने व्यावसायिक विस्तार और लोकप्रियता प्राप्त करने के लिए ऐसे आदर्श वाक्यों का चयन करतें हैं, जिनमें उपरोक्त मानवीय गुणों की अभिव्यक्ति होती है, गुण समाचार माध्यम अपने घोषित–प्रचारित आदर्श वाक्य के अनुकूल आचरण नही करता तो समाज में उसे स्वीकार्यता नही

मिलती। इसलिए मानवीय गुणों का पोषण कम या अधिक प्रत्येक समाचार माध्यम की बाध्यता है यही बाध्यता व्यापक स्तर पर पत्रकारिता का एक उद्देश्य बन जाती है।

➢ ज्ञान–विज्ञान का संचार :

पत्रकारिता सामाजिक जागृति और मानवीय गुणों के साथ–साथ लौकिक ज्ञान में वृद्धि करती है। "राजनीति अर्थव्यवस्था, धर्म, दर्शन, विज्ञान, सिनेमा आदि विषय से जुड़ी सूचना के साथ–साथ समाचार माध्यम इनसे जुडे तथ्यों को भी पाठकों या दर्शको के समक्ष प्रस्तुत करते हैं।"**2** समाचार माध्यम शासन की योजनाओं और नीतियों को समाज के समक्ष लातें है तो ज्ञान– विज्ञान के विविध आयामों से पाठकों के ज्ञान में वृद्धि करते हैं। मानव शरीर, प्रकृति, वायुमंडल, पर्यावरण, स्वास्थ्य आादि से जुडी आविष्कारों और खोजों के समाचारों व लेखों का विवरण पहले से ही ग्रंथों में उपलब्द है परन्तु हर किसी व्यक्ति के लिए उनका अध्ययन करना संभव नहीं है समाचार माध्यम उसी ज्ञान को सरल–सुग्राहय भाषा में पाठकों को उपलब्द करातें हैं।

➢ मनोरंजन :

सूचनाओं और ज्ञान–विज्ञान के प्रचार–प्रसार के अलावा पत्रकारिता मनोरंजन का मुख्य साधन है। सामान्यतः मनुष्य दैनिक क्रिया–कलापों में इतना उलझ जाता कि उसे कुछ अलग करने सोचने की इच्छा होती है। वह ऐसा काम करना चाहता है जिससे मन का रंजन हो। ऐसी स्थिति में वह समाचार माध्यमों द्वारा प्रसारित सामग्री की ओर देखता है। अधिकतर समाचार माध्यम जनसामान्य की इस रूची के मद्देनजर मनोरंजक सामग्री चुटकुले, लधु कथओं, नाटकों, हास्य कविताओं, व्यंग्य आदि का प्रसारण करते हैं। चित्रकला, सिनेमा आदि से जुडी सामग्री भी स्वाभाविक रूप से पाठकों का मनोरंजन करती है। समाचार माध्यमों की एक विशेषता यह भी कि वे

अपने पाठकों का स्वास्थ मनोरंजन करने के साथ–साथ नई सूचनॉए भी प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञापनों को भी मनोरंजक तरीकों से प्रस्तुत कर वे अपने दोहरे दायित्व को पूरा करते है। समाचार माध्यमों के उक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कोई आचार–संहिता हो अथवा इन उद्देश्यों का सैद्धांतिक तौर पर निर्धारण किया गया हो ऐसा नही हे, बल्कि यह पत्रकारिता के स्वाभाविक उद्देश्यों से इतर कार्य करता है तो वह न तो समाज में स्वीकार्यता प्राप्त कर सकता है और न ही व्यावसायिक रूप में स्थापित हो सकता है।

3.2 आधुनिक पत्रकारिता का वर्गीकरण

पत्रकारिता के आरंभिक युग में समाचार माध्यमों का क्षेत्र अत्यंत सीमित था। लोग समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं का देश–विदेश की घटनाओं के बारे में जानने के लिए पढ़ते थे। परन्तु पत्रकारिता के विकास के साथ–साथ उसमें नित नए आयाम जुडतें रहे तो लोगों की अपेक्षॉए भी उससे बढ़ती गई हैं। आज पत्रकारिता का क्षेत्र इतना विस्तृत हो गया है कि पत्रकारिता का वर्गीगरण किए बिना उसे ठीक से नही समझा जा सकता। साथ ही यह भी एक तथ्य है कि पत्रकारिता को आज एक विषय सीमा में या क्षेत्र तक सीमित नही रखा जा सकता। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो पत्रकारिता का क्षेत्र सामान्य मनुष्य की सोच से बहुत आगे का बन चुका है। यह कहना अतिशयोक्ति पूर्ण नही होगा कि पत्रकारिता पूर्ण नहीं होती कि पत्रकारिता का क्षेत्र जीवन एवं सृष्टि के बराबर व्यापक हो चुका है। अर्थात् संपूर्ण मानवीय एवं भौतिक प्रवृत्तियॉ आधुनिक की प्रेरक हैं। इसमें समाज की रूचि और उपादेयता दोनों का समान रूप से समावेश है। ऐसी स्थिति में पत्रकारिता के वर्गीकरण के दो आधार अपनाए गए हैं।

विषय प्रतिपादन के आधार

विषय प्रतिपादन का आधार पर पत्रकारिता का वर्गीकरण पत्रकारिता के उत्तरोत्तर विकास का प्रतीक है। विषय प्रतिपादन के आधार पर पत्रकारिता के निम्नांकित वर्ग है–

1. **सूचना प्रधान पत्रकारिता** : सूचना प्रधान पत्रकारिता सामान्य किस्म परन्तु महत्वपूर्ण कार्य है। इसमें विभिन्न घटनाओं एवं गतिविधियों की सूचना जनसामान्य को उपलब्द कराई जाती है। समारोहों, आयोजनों का विवरण, सरकारी और गैर सरकारी समस्याओं के क्रिया–कलाप और प्राकृतिक आपदाओं की जानकारी सूचना प्रदान समाचारों के अंतर्गत आती है।इस तरह के समाचार सामान्यतः पत्रकारों को प्रेस वार्ताओं, प्रेस विज्ञप्तियों से प्राप्त हो जाते है। सूचना प्रधान पत्रकारिता में नवीनता और मौलिकता का होना आवश्यक है। एक समाचार माध्यम के लिए सूचना प्रधान पत्रकारिता का विशेष महत्व होता है। सामान्यताः पाठक सूचनाएँ और नवीनतम जानकारी प्राप्त करना चाहता है सूचना प्रधान समाचारों के चयन में संपादक को उनके महत्व पर विशेष ध्यान देना पड़ता है। उसे यह देखना होता है कि उसे अपने पाठको की रूचि और माध्यम की प्राथमिकता को देखते हुए इस आधार सूचनाओं को प्रसारित किया जाए। सूचना प्रधान पत्रकारिता में शासकीय निर्णयों को विशेष प्राथमिकता प्रदान की जाती है क्योंकि ऐसे मामले में ही वे सता और समाज के बीच संवाद स्थापित करने की भूमिका में होते हैं।

2. **खोजी अथवा अन्वेषी पत्रकारिता :** यद्यपि खोजी अथवा अन्वेषी पत्रकारिता भी सूचना प्रघान पत्रकारिता का एक रूप है परन्तु इसमें सामान्य सूचना न होकर गूढ़ एवं गोपनीय तथ्यों की जानकारी होती है। खोजी पत्रकारिता के अंतर्गत

समाचार माध्यम एवं त्रकार ऐसे तथ्यों का उद्घाटन करते है, जिन्हें शासन, संस्थाएँ अथवा व्यक्ति जानबूझ कर छिपाने दबाने की कोशिश करते हैं। विभिन्न अपराधिक गतिविधियों, सामाजिक बुराईयों शासन–प्रशासन की लापरवाही या उनका भ्रष्टाचार आदि की गहन खोजबीन और सप्रमाण उनका प्रकाशन एवं प्रसारण अन्वेषी पत्रकारिता पत्रकार और समाचार माध्यम दानों के लिए चुनौतिपूर्ण काम होता है। एक पत्रकार को ऐसे समाचार से संबंधित तथ्यों को प्राप्त करने के लिए अपराधियों, असामाजिक तत्वों, भ्रष्ट नेताओं व नौकरशाहों का सामना करना पडता है तो समाचार पत्रों को अपुष्ट प्रमाणों और आधे–अधूरे तथ्यों के प्रकाशन पर कानूनी दावपेंच में उलझना पड़ सकता हैं। वर्तमान समय में संचार माध्यमों के विस्तार के कारण सूचना प्रधान पत्रकारिता को समाज में प्रभाव बनाने का और समाचार माध्यम की सफलता का मूल मंत्र माना जाता है।

3. **व्याख्यात्मक पत्रकारिता :** सूचनाओं एवं तथ्यों को स्पष्टीकरण सहित व्याख्या करके प्रस्तुत करने को व्याख्यात्मक पत्रकारिता कहा जाता है। आधुनिक युग में पत्रकारिता के विकास और विस्तार के साथ–साथ गूढ़ गंभीर परिणामों का अंदेशा होता है। इसका आभास सामान्य पाठक या दर्शक को तत्काल नही होता लेकिन एक पत्रकार की कार्य क्षमता और प्रस्तुति कौशल से उत्तरोत्तर विकास के साथ–साथ ऐसी तथ्यों को आसानी से समझा सकता है। अतः उसका यह दायित्व हो जाता है कि ऐसी घटनाओं एवं सूचनाओं को पूर्ण व्याख्या के साथ प्रसतुत करे। "व्याख्यात्मक पत्रकारिता जनसामान्य को किसी भी समाचार में अंतर्निहित तथ्य को जानने समझने की दृष्टि देती है।"**3** व्याख्यात्मक पत्रकारिता के विकास ने समाचार फीचर ऐजेंसियॉ और पत्रकारों

की अहम् भूमिका होती है। सामान्यतः समाचार पत्रों के समाचार विश्लेषण एवं फीचर और साप्ताहिक, पाक्षिक एवं मासिक पत्रिकाओं की सामान्य सामग्री व्याख्यात्मकता पर आधारित होती है।

4. **वैचारिक पत्रकारिता :** व्याख्यात्मक पत्रकारिता के समान ही वैचारिक पत्रकारिता में सभी सूचना अथवा घटना की विवेचना होती है। अंतर इतना है कि व्याख्यात्मक पत्रकारिता में तथ्यों को तटस्थ भाव से प्रस्तुत किया जाता है तो वैचारिक पत्रकारिता के लेखक का विचार एवं दृष्टिकोण प्रमुख होता है। वह अपने विचार के अनुरूप घटना के कारणों की विवेचना कर भावी परिणामों में जनता को आग्रह करता है। वैचारिक पत्रकारिता में उस विचार को प्रमुखता दी जाती है जिससे लेखक या समाचार माध्यम प्रभावित होता है। वैचारिक पत्रकारिता का उद्देश्य मूलतः एक निश्चित विचारधारा से प्रभावित होतें है परन्तु वे निष्पक्षता का दवा करते हुए सभी तरह के विचारों से प्रेरित समाचारों को महत्व देतें हैं। अधिकतर समाचार पत्र वैचारिक प्रचार–प्रसार के लिए विश्लेषणात्मक लेख प्रकाशित करते हैं, जिसमें सभी विचारधाराओं के लेखकों को महत्व दिया जाता है। जहॉ तक पत्रकार का प्रशन है कोई भी बिना विचारधारा के अपनी पहचान नहीं बना सकता। यह अलग बात है कि समाज पत्र या पत्रकार के निष्पक्ष होने की अपेक्षा करता है परन्तु बिना विचारधारा के पत्रकारिता करना एक हद तक ही सभंव है। यही कारण है कि समाचार पत्रों, पत्रिकाओं और टेलीविजन कार्यक्रमों में पत्रकारों की वैचारिक आस्था साफ दिखाई देती है।

5. **मनोरंजन पत्रकारिता :** सामान्यतः मनोरंजन के साधनों से जुडे समाचारों को मनोरंजन पत्रकारिता कहा जाता है। परन्तु यह आवश्यक नही कि मनोरंजन दुनिया के समाचार ही मनोरंजन है। मनोरंजन पत्रकारिता विषय प्रतिपादन की ऐसी कला है जिसमें किसी भी सामान्य समाचार को रोचक बनाकर प्रस्तुत किया जाता है। अधिकतर दोपहर एवं संध्या समाचार पत्रों में ऐसी रोचकता मिलती है। कई बार संपादक सामान्य समाचार के शीषर्क को ऐसा रोचक बना देतें हैं कि पाठक का मन बरबस ही उस ओर खींच जाता है। मनोरंजक पत्रकारिता से पाठको का मनोरंजन तो होता ही है उनकी पत्र–पत्रिकाएँ पाठकों के मनोरंजन के लिए चुटकुले, नाटक व्यंग्य आदि नियमित प्रकाशित करते हैं। पर ये स्वतः मनोरंजन की विधाएँ है जबकि मनोरंजन पत्रकारिता प्रतिपादन की एक शैली है।

विषय क्षेत्र के आधार

विषय क्षेत्र के आधार पर पत्रकारिता का वर्गीकरण निम्नलिखित रूप में किया जाता है–

1. **राजनैतिक पत्रकारिता :** रातजीति सामाजिक नियंत्रण और प्रबंधन का एक रूप है। किसी भी समाज का विकास उसमें राजनैतिक नेतृत्व की इच्छा और समझ पर आधारित होती है। यही कारण है कि पत्रकारिता आरम्भ से ही राजनीति पर केन्द्रित रही है। पत्रकारिता के प्रति स्थापित धारणा "चौथा स्तम्भ" की हो या "संवाद का माध्यम" वाली इसका कारण ही उसका राजनैतिक रूप है। राजनैतिक पत्रकारिता के अंतर्गत शासन की गतिविधियॉ, नीतियों व कानूनों का निर्माण, विभिन्न राजनैतिक संगठनों की गतिविधियॉ और शासन व राजनैनीति के प्रति जनकाक्षाऍ आती हैं। राजनैतिक पत्रकारिता है।

2. **आर्थिक पत्रकारिता :** अर्थ से संबंध सभी किया– कलापों को व्यक्त करने के उद्देश्य से आर्थिक पत्रकारिता का वकास हुआ हे। मुद्रा, बाज़ार, उद्योग, बैंक, सरकार की आर्थिक नीति, बजट आदि आर्थिक पत्रकारिता के विषय है। यद्यपि सामान्य समाचार पत्रों में आर्थिक विषयों के लिए एक–दो या इससे अधिक पृष्ठ निश्चित होते हैं तथापि समाज की आर्थिक चेतना और अर्थ प्रधान समाज व्यवस्था के कारण अब आर्थिक विषयों पर केन्द्रित पत्र–पत्रिकाऍ आरम्भ हो गई हैं। आर्थिक पत्रकारिता में उन पत्रकारों को ही अधिक महत्व मिलता है जो अर्थशास्त्र व वाणिज्य के जानकर होतें हैं।

3. **साहित्यिक पत्रकारिता :** साहित्य और पत्रकारिता का संबंध अथवा दोनों की एक दूसरे पर निर्भरता जगाहिर है। साहित्य पत्रकारिता के महत्व को इन कथन

से समझा जा सकता है। पत्रकारिता का अभीष्ट तात्कालिकता के स्माध्यम से शाश्वत की साधना है। कहानी, कविता, निबंध, आलोचना, समीक्षा साहित्य के मुख्य विषय है और लेखन शैली, भाषा और प्रस्तुति की विशेषताएँ साहित्यिक पत्रकारिता को सामान्य से उत्कृष्ट बनाती हैं।

4. **पर्यावरण पत्रकारिता :** पत्रकारिता का यह सबसे नया रूप है। पर्यावरण संरक्षण और परिस्थिति की संतुलन के प्रति मानवीय चिंताओं और चेतना ने पत्रकारिता के इस रूप को महत्वपूर्ण विषय बना दिया है। वन, वन्य जीवन और पर्यावरण आंदोलन, विकास प्रक्रिया से पर्यावरणीय क्षति व उसकी सुरक्षा के उपााय वनों पर आदमी की निर्भरता, पृथ्वी की संवेदनशीलता, ध्वनि जल और वायु प्रदूषण से जुड़े पहलू पर्यावरण के अंतर्गत आतें है।

5. **स्वास्थ्य पत्रकारिता :** स्वास्थ्य को लेकर तेज़ी से बढ़ी चेतना और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र की खोजों ने स्वास्थ्य पत्रकारिता को आकार दिया है। स्वास्थ्य पत्रकारिता के अंतर्गत विभिन्न रोगों के लक्षणों, कारणों और उनके उपचार का विवरण होता है। चिकित्सा विज्ञान की उपलब्धियों और विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों का विवरण, नवीनतम चिकित्सा आविष्कार आदि सभी स्वास्थ पत्रकारिता के अंतर्गत आते हैं। महिलाओं की रूप–सौन्दर्य एवं प्रसव संबंधी जानकारी भी स्वास्थ्य पत्रकारिता के अंतर्गत आती है।

3.3 पत्रकारिता की आधुनिक विधाएँ

मानव जो कुछ भी देखता है उसे अन्य व्यक्तियों को बतलाना चाहता है, साथ ही सबकी बातों को जानना चाहता है। किसी घटना को परखना और उसका वर्णन करना मानवीय आत्मा की एक सहज प्रवृति है। इसी भावाभिव्यक्ति की प्रवृति के कारण जनमाध्यम का आविष्कार हुआ। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि जिस प्रकार ज्ञान–प्राप्ति की उत्कण्ठा, चिन्तन एवं अभिव्यक्ति की आकांशा ने भाषा को जन्म दिया, ठीक उसी प्रकार समाज में एक–दूसरे के कुशल–क्षेम जानने प्रबल इच्छा–शक्ति ने पत्रों के प्रकाशन को बढ़ावा दिया। समय और समाज के संदर्भ में सहज रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता करते हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में जगह–जगह पर "शुभदृष्टि" ही पत्रकारिता है जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। गांधीजी तो इसमें "समदृष्टि" को महत्व देते थे। पहले पत्रकारिता का तात्पर्य समाचारों का संकलन तथा प्रसारण था। परन्तु जैसे–जैसे समाचार पत्रों में सामाचार–प्रेषण, मुद्रण और वितरण के साधनों में वैज्ञानिक प्रविधिक और शिल्पगत उन्नति होती गयी, पत्रकारिता का क्षेत्र विस्तृत होता गया। "पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में "जर्नलिस्म" शब्द व्यवहृत होता है जो "जर्नल" से निकला है जिसका शाब्दिक अर्थ दैनिक है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया–कलापों, सरकारी बैठकों का विवरण "जर्नल" में रहता है। "जर्नल" से बना "जर्नलिस्म" अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है।"**4** समाचार पत्रों एवं विविध कालिक पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन और तत्संबंधी कार्यों को पत्रकारिता के अंतर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन–प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। समसामयिक गतिविधियों के संचार से संबंध सभी अधतन साधन इसके अंतर्गत समाहित हैं। पत्रों के अतिरिक्त आकाशवाणी एवं दूरदर्शन भी अब पत्रकारिता के क्षेत्र में आ चुकें हैं। अतः प्रकाशन, चित्रों द्वारा प्रस्तुतिकरण तथा

प्रसारण हेतु सामयिक और सरस तथ्यों के संग्रह और संपादन को पत्रकारिता कहा जा सकता है।

पत्रकारिता के स्वरूप को स्पष्ट करने का प्रयत्न अनेक विद्वानों ने किया है। आधुनिक संदर्भों में पत्रकारिता का फलक इतना व्यापक हो गया कि इसका सीमांकन कठिन हो गया है। दिन–प्रतिदिन के क्रिया कलापों, सरकारी बैठको का विवरण जर्नल में रहता था। समाचार पत्रों एवं विविध कालिक पत्रिकाओं के सम्पादन एवं लेखन और तत्संबंधी कार्यो को पत्रकारिता के अंतर्गत रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन, प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यावसायिक संगठन पत्रकारिता है। समसामयिक गतिविधियों के संचार सं संबध सभी साधन चाहे वह रेडियों हो या टेलीविजन इसी के अंतर्गत आते हैं।

पत्रकारिता संदर्भ ज्ञान कोष में "जनसूचना", जनसंचार, जनरंजन अथवा जनसाधारण तक समाचार–विचार सम्प्रेषण हेतु संचालित माध्यमों के संपादन, मुद्रण, प्रकाशण, संयोजन, प्रसारण आदि विधा या कला, को पत्रकारिता माना जाता है।

" पत्रकारिता, माध्यम, प्रेस, जनमाध्यम, जनसंचार "5

प्रायः पत्रकारिता (जर्नलिज्म), माध्यम (मीडिया), प्रेस जनमाध्यम (मास मीडिया), जनसंचार (मास कम्युनिकेशन) को एक ही अर्थ में ग्रहण किया जाता है, पर सूक्ष्म दृष्टि से इन सभी शब्दों का अपना एक विशिष्ट अर्थ है।

पत्रकारिता (जर्नलिज्म) में संचार के साधन तथा पत्रकारिता की गतिविधियों को संचारित करनेवाली संगठन आते हैं। प्रेस, तकनीकी रूप से समाचार पत्र को संकेतित करता हैं।

जनमाध्यम (मास मीडिया) का तात्पर्य सभी प्रकार के प्रकाशन, प्रसारण कार्यक्रम, पुस्तक तथा फिल्म आदि प्रमुख साधनों से है।

जनसंचार (मास कम्युनिकेशन) में जनमाध्यम के सभी साधनों के अतिरिक्त टेलीफोन, टेलीग्राफ, डाकसेवा इत्यादी सम्मिलित हैं।

3.4 पत्रकारिता के आधुनिक रूझान

हमारे सामने अचानक कम्पयूटर की नयी दुनिया आकर खडी हो गई है। तकनीकी क्रान्ति ने प्रगति तथा समृद्धि के नये अवसर पैदा किए हैं। इस नए आर्थिक संसार में प्रवेश किए बिना प्रगति का दूसरा मार्ग दृष्टिगत नहीं होता। इस प्रकार भारतीय पत्रकारिता के समक्ष यह एक कठिन चुनौती है कि भारतीय पाठक इस नई दुनिया में प्रवेश कैसे पाएँ ताकि पिछडे न रहें। इस चुनौती का सामना करने के लिए भारतीय पत्र–पत्रिकाओं को नई तकनीकी को आत्मसात करना पडेगा, प्रस्तुतिकरण की नई शैली सीखनी होगी। कम्पयूटर तथा आर्थिक गतिविधियों को समझने के लिए नई व्यवस्था विकसित करनी होगी। इसका तात्पर्य है कि पत्रकारिता क वर्तमान ढ़ॉचे में परिवर्तन करना होगा। बडे पत्र–पत्रिकाओं के प्रंबंध के शीर्ष पर जो लोग वर्तमान में आसीन हैं, उनकी प्रथम प्राथमिकता अंग्रेजी है। वे सारे लोग अंग्रेजी में ही पढ़ते, लिखते तथा सोचते हैं, उनकी चिन्तॉए जीवन शैली तथा औचित्य अंग्रेजियत वाले ही हैं। इन लोगों को अपने भारतीय भाषा से संबंध पत्र–पत्रिकाओं का आकर्षण बना

बना हुआ है। उस समय भारतीय पत्रों के साथ–साथ अंग्रेजी पत्रों को भी अधिक मान्यता दी जाती थी। इस प्रकार अंग्रेजी के पत्रों को या तो सरकारी रियायति कागज दिया न जाए, अगर दिया भी जाए तो भारतीय भाषायी पत्रों के मुकाबले अधिक मूल्य पर। इस संरक्षण से जहॉ भारतीय भाषाओं के पत्रों की आर्थिक स्थिति सुधरेगी तथा साथ ही भारतीय भाषाओं के विकास का भारत सरकार का दायित्व भी पूरा होगा। यद्यपि यह सुझाव अत्यंत सरल संरचना वाला तथा दूरगामी शुभ परिणामों वाला है, किन्तु शीर्ष पर बैठे, "कालनेमियों" को रास नहीं आएगा।

पत्र–पत्रिकाओं की अर्थव्यवस्था में विज्ञापनों का महत्वपूर्ण योगदान है। विज्ञापनों के बिना समाचारपत्रों का बहुत दिनों तक चलना असंभव है। विज्ञापन प्राप्त करने के लिए समाचार पत्र की प्रसार संख्या अधिक होना पर्याप्त नहीं है, विज्ञापनदाता उसी पत्र–पत्रिका को विज्ञापन देता है जिसकी पहुॅच अभिजात्य वर्ग तक हो। इस प्रकार अगर देखा जाए तो भारत में पत्रकारिता शिक्षा का इतिहास मात्र पचास वर्ष पुराना है। यदि भारत में व्यवस्थित ढ़ंग से पत्रकारिता 19 वी शताब्दी के तीसरे–चौथे दशक में आरम्भ हुई तो भी पत्रकारिता शिक्षा का आरम्भ होनें में पूरी एक शताब्दी लगी। देश में पत्रकारिता शिक्षा का विभाग सबसे पहले अभिभाजित भारत में लाहौर स्थित पंजाब विशविद्यालय में खुला। पत्रकारिता शिक्षा का वास्तविक विकास आठवें दशक की संचार क्रान्ति के बाद हुआ। विकास की गति तीव्र होने के कारण अनुभव द्वारा सीखने की परम्परा का निर्वाह कठिन होने लगा। आज 60 से अधिक विश्वविद्यालयों में जनसंचार तथा पत्रकारिता के विभाग है। पत्रकारिता शिक्षा का तेजी से विकास हो रहा है किनतु इसके बावजूद प्रशिक्षण सेवाएॅ, जनसंचार उद्योग की आवश्यकता पूर्ण करने में असमर्थ प्रतीत होती है। इसलिए इस बात की आवश्यकता थी कि पत्रकारिता शिक्षा को समाचारपत्र के आवश्यकताओं के अनुरूप ढ़ाला जाए। समाचार पत्र उद्योग में अखबारी कागज़ की महत्वपूर्ण भूमिका है। कागज की कमी उद्योग के समक्ष संकट

उत्पन्न कर देते है। भारतीय भाषायी पत्र–पत्रिकाओं के समक्ष कागज़ की समस्या अन्य कारणों से भी उपस्थित होती है। समाचारपत्रों के रजिस्ट्रार तथा सर्वेक्षण प्रतिवेदन यह बताते है कि भारतीय भाषाओं विशेषकर हिन्दी के पाठकवर्ग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इसके फलस्वरूप भारतीय भाषायी पत्रों का खूब विकास हो रहा है। यह बात कहना आवश्यक है कि एक उत्तम पत्रकारिता श्रेष्ठ सम्पादकों द्वारा ही संभव है भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता, विशेष रूप से हिन्दी पत्रकारिता जब नई ऊॅच्चाइयों को छू रही थी तब एक से एक स्वाभीमानी संवादक पैदा हो रहें थे। उस समय पत्र–पत्रिकाओं को उनके संपादकों के नाम से जाना जाता था। संपादक किसी भी पत्र–पत्रिका के वैचारिक व्यक्तित्व का केन्द्र है। इस प्रकार के प्रतिक्रियाओं से ही पत्रकारिता का क्षेत्र आगे बढ़ता आया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा – इन्द्र चन्द्र रजवार – पृ.सं : 51

2. पत्रकारिता और जनसंचार – डॉ.अनिकुमार अध्याय – पृ.सं : 53

3. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा – इन्द्र चन्द्र रजवार – पृ.सं : 56

4. हिन्दी पत्रकारिता – कृष्ण बिहारी मिश्र – पृ.सं : 190

5. हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास – मीनाक्षी सिंह – पृ.सं : 191

4. आधुनिक युग में हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियॉ

हिन्दी पत्रकारिता को जन्में भले ही पौने दो सौ साल पूरे हो गए हैं, लेकिन उच्च शिक्षा के अध्ययन विषय के रूप में वह सभी आकार ही ग्रहण कर रही है। भारत में जिस तरह आधुनिक पत्रकारिता की शुरूआत ॲग्रेजी से हुई, उसी तरह पत्रकारिता शिक्षण भी पहले ॲग्रेजी में हुआ, यह स्वाभाविक भी है। जनसंचार की हमारी परम्परा चाहे कितनी भी प्राचीन हो, लेकिन आज की हमारी पत्रकारिता हिन्दी से ही निकली है पर इस लम्बें अंतराल में उसने ॲग्रेजी से अलग अपना देशज रूप भी बनाया है। हिन्दी पत्रकारिता देश के, समाज के हमारी राष्ट्रीय–सांस्कृतिक परम्पराओं के ज्यादा करीब रही है। आम जनता के दुख ज्यादा करीब रही है। आम जनता के दुख दर्द की वह कुछ ज्यादा प्रमाणिक गवाही देती है। ॲग्रेजी पत्रकारिता हिन्दी की अपेक्षा व्यावसायिक जरूर अधिक है और समाचारों विचारों की व्यापकता और गहराई की दृष्टि से भी वह हिन्दी पत्रकारिता से आगे दिखाई पडती है मगर वह सचमुच जन आवाज़ नहीं कहीं जा सकती। इसलिए दोनों के बीच इस मौलिक भेद को देखते हुए यदि हिन्दी पत्रकारिता के शिक्षण की तैयारी ॲग्रेजी से अलग होती तो शायद हिन्दी पत्रकारिता अपना अलग रूप ग्रहण कर पाती, लेकिन दुर्भाग्य से ऐसा नहीं हो पाया। हिन्दी पत्रकारिता तो फिर भी बीच–बीच में अपना स्वतंत्र रूप दिखती भी है लेकिन पत्रकारिता के शिक्षण–प्रशिक्षण का क्षेत्र एकदम उपेक्षित होने की वजह से हिन्दी में चलनेवाले पत्रकारिता पाठ्यक्रम, अंग्रेजी पाठ्यक्रमों के निहायत पिछलग्गू बनकर रह गया हैं। इसका सबसे बडा कारण यह लगता है कि हिन्दी पत्रकारिता में नामी पत्रकारों ने इसे अपेक्षा से अधिक नज़रअंदाज किया। इस प्रकार हिन्दी में व्यावसायिक पत्रकारों और विचारशील पत्रकारों की कमी नहीं है।

4.1 पत्रकार और समाज

पत्रकार राष्ट्र और समाज का प्रहारी होते हैं। वह अपनी बुद्धि कला और निष्ठा से अतीत के ज्ञान, वर्तमान की जानकारी समाज को देता है और सुखी व समृद्ध भविष्य की ओर बढ़ने को प्रशस्त करता है। एक आदर्श पत्रकार नित नये ज्ञान और अनुभव की तलाश में रहता है–स्वयं परेशानी झेलते हुए समाज की हित की कल्पना करना ही उसका ध्येय होता है। जाति धर्म और वर्ग का सीमाओं से मुक्त होकर मानव मात्र कल्याण ही पत्रकार का सपना होता है। निजी पारिवारिक एवं समाजिक जीवन से जुडे उसके तमाम सपने एक ऐसे बिन्दु पर केन्द्रित हा जाते है। उसे व्यावसायिक उत्तरदायित्व के अतिरिक्त कुछ नहीं दिखायी देता।

एक ओर वह ईमानदारी पादरी, परी और परमहंस की तरह भीड़ में अलग से पहचाना जा सकता है। दूसरी और सच्चा पत्रकार पूरी तरह उस समुदाय से धुला–मिला होता है जिसकी आशाओं और मार्गो को वह व्यक्त करता है और जिसका वह बिना चुने प्रतिनिधित्व करता है। एक पत्रकार समय और समाज का कुशल पारखी होता है। उसमें सामाजिक दायित्व बोध कूट–कूट कर भरा होता है। पत्रकार समाचार माध्यमों के जरिए एक निश्चित अवधि में जनमत को निश्चित दिशा में प्रभावित करता है। पत्रकार वह अध्ययनशील बहुश्रुत बुद्धिजीवी होता है जो अपनी समझ के अनूरूप घटनाओं और समस्याओं की जानकारी और उन्हें समझने की दृष्टि पाठकों को देता है।

पत्रकारिता में पत्रकार लोगों को समाचार पत्र अकाल या प्लेग जैसी महामारी का मुकाबला करने की शिक्षा देते थे। अस्पृश्यता, निरक्षता जैसी सामाजिक बुराइयों के अनन्मूल के लिए भी प्रेरित करते है। पत्रकार का कर्तव्य जानकारी देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना है। उसका सबसे प्रथम कर्तव्य देश के सामाजिक, आर्थिक,

राजनैतिक और सांस्कुतिक जीवन के बारे में पूरी और निष्पक्ष जानकारी देना है। शिक्षा और जन–जागृति भी उसकी भूमिका का एक अंग है। छोटे और मझोले स्तर के पत्रकारों का कर्तव्य अपने क्षेत्र के समाचार देना और उसकी समस्याओं की चर्चा करना है। समाज के प्रति अपना उत्तरदायित्व हमारे पत्रकारों किस तरह भुला देते हैं इसके कई उदाहरण दिए जा सकते हैं, अखबारों में पत्रकार का ध्यान तत्कालिक सनसनीखोज घटनाओं पर ही केन्द्रित रहता है। पत्रकार राजनैतिक और सामाजिक प्रश्नों पर अपने विवेक के अनुसार स्वतंत्र नीति अपनाते थे और उसकी कीमत चुकाने को तैयार रहते थे। समाज के प्रति उत्तरदायित्व और प्रतिबद्धता के कारण पत्रकार लोकतंत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

पत्रकार रातनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में जनता की विचार धारा पर असर डालते हैं। व्यापार, उद्योग, खेलकूद आदि के समाचार पहले के मुकाबले अब कई गुना अधिक रहते है। अपराधों से संबंधित समाचारों से अखबार भरे रहते है खास कर अपराध का शिकार कोई प्रसिद्ध व्यक्ति हो। कृषि, विज्ञान, चिकित्सा आदि क्षेत्र पहले भी अपेक्षित हैं। आज पत्रकारों ने समाज को प्रेरणा देने का अपना उत्तरदायित्व है। समाज में स्त्री शिक्षा, समाज सुधार करना अपना कर्तव्य मानते है। आदर्श पत्रकार वह है जो प्राचीन ज्ञान को जीवन के मुख्य तथ्यों को अच्छी तरह बोधगम्य करने इन सबके हृदय में सजाकर रखना चाहिए। आशय यही है कि वास्तविक पत्रकार वह हे जो समय और समाज का कुशल पारखी हो तथा जिसमें पारखी हो तथा जिसमें दायित्व बोध है। पत्रकार समाज से मुक्त होकर अपना कार्य सुचारू रूप में नहीं कर सकता है। वह सामाजिक उत्तरदायित्व के कारण ही खबरों को गंभीरता और संवेदनशीलता से ग्रहण करता है। पत्रकार समाज या राष्ट्र की समस्याओं की

चर्चा करते समय सदा विधायक दृष्टि अपनाते हैं। पत्रकारिता, पत्रकार और समाज का गहरा संबंध है।

4.2 हिन्दी भाषा की विशेषताएँ

भाषा मानवसभ्यता के विषय की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धि है। मानव जाति का सारा ज्ञान भाषा के माध्यम से ही विकसित हुआ है। सृष्टि में केवल मानव ही वाक्शक्ति सम्पन्न प्राणी है और यही उसकी श्रेष्ठता का मानदण्ड है। दैनिक व्यवहार में भाषा शब्द का प्रयोग बहुत ही व्यापक अर्थो में किया जाता है। अपने चिवचार प्रकट करने के लिए हम जिन–जिन साधनों का प्रयोग करते है, वे सब भाषा के व्यापक दायरे में आ जाते हैं। इस प्रकार भाषा की कुछ सामान्य विशेषताॅए है जो प्रायः सभी भाषाओं में पायी जाती हैं। इन्हें भाषा की "प्रकृति" या "सामान्य प्रवृत्तियॉ" भी कहा जाता है। यहॉ ऐसी कुछ विशेषताओं का उतलेख किया जा रहा है।

➢ भाषा सामाजिक वस्तु है।

भाषा की परिभाषा में कहा गया है कि भाषा विचार विनिमय का माध्यम है। इसके द्वारा किसी समाज के लोग विचारों का आदान–प्रदान करते हैं। भाषा के लिए दो पक्ष जरूरी है, वक्ता और श्रोता। जैसे ही व्यकित एक से दो होतें है, समाज के निर्माण की शुरूआत हो जाती है। यहीं से भाषा की समाजिकता शुरू होती है, भाषा का जन्म समाज में होता है और समाज में ही वह विकसित होता है। बिना समाज के भाषा की कल्पना भी नहीं की जाती है। भाषा के विकास की कहानी समाज से ही जुडी है। प्रत्येक भाषा में उसके सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन का प्रतिबिम्ब देखा जा सकता है। यह उसकी सामाजिकता का प्रमाण है।

➢ भाषा पैतृक या अनुवंशिक सम्पत्ति नहीं है।

भाषा, ऊपरी तौर पर, मनुष्य की जन्मजात सम्पत्ति है। बच्चा परिवार में रहकर कब भषा सीख जाता है, इसका पता ही नहीं चलता। सामन्यतः तीन साल का बच्चा उतनी भाषा जानता है, जितनी व्यवहार के लिए आवश्यक होती है। वह बडा होता जाता है और उसकी भाषा का क्षेत्र भी उसी अनुपात में बढता जाता है। भाषा सीखने के लिए उसे कभी कोई प्रयास नहीं करना पडता। भाषा की यह अर्जन प्रक्रिया मॉ की गोद से प्रारम्भ होती है। यदि किसी बच्चे को डेढ़ साल की उम्र में कोई ले ले, तो वह नये परिवार की भाषा को उतनी ही सहजता से सीखेगा, जितनी अपनी "मॉ की भाषा" को। यह कहानी सिद्ध करती है कि भाषा पैत्रिक दाय नहीं हैं।

➢ भाषा अर्जित वस्तु है।

ऊपर के उदाहरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि भाषा हम मॉ के पेट से सीखकर नहीं आते। वह हमें अर्जित करनी पड़ती है। बच्चा अधिकतर भाषा व्यवहार सीखता है। भारतीय काव्यशास्त्र में इस अर्जन प्रक्रिया का एक सुन्दर उदाहरण मिलता है। बच्चा समाज में रहे लोगों से ही भाषा सीखता है। बडों के बातों से ही बच्चे रोज़ नए शब्दों को सीखतें हैं। वस्तुतः बच्चा अधिकतर भाषा इसी प्रकार सीखता है।

➢ भाषा परम्परागत वस्तु है।

भाषा एक सनातन वस्तु है, जो हमें परम्परा से प्राप्त होती है। हम अपने परिवार में जो भाषा बोलते है, वह हमें अपने माता–पिता से मिलती है, माता–पिता को दादा–दादी से और उन्हें अपने पूर्ववर्ती पीढ़ी से। यह प्रवाह अनादिकाल से इसी

प्रकार चला आ रहा है। समय के साथ भाषा बदलती रहती है, परन्तु उसका प्रवाह कभी खण्डित नहीं होता। यदि हम किसी नई भाषा का निर्माण करना चाहें तो नहीं कर सकते। पिछली शताब्दी में विश्व के कुछ उत्साही बुद्धिजीवियों ने "एस्पिरेन्टो" नाम की एक विश्वभाषा का निर्माण किया। परन्तु यह प्रयोग सफल नहीं रहा। कारण यही था कि यह प्रयास भाषा की प्रकृति के विरूद्ध था, क्योंकि भाषा की प्रकृति के विरूद्ध था, क्योंकि भाषा परम्परागत वस्तु है, उसका निर्माण नहीं होता।

➢ भाषा नित्य परिवर्तनशील है।

भाषा निरन्तर बदलती रहती है। यह परिवर्तन ध्वनि, रूपरचना, वाक्यविन्यास और अर्थ सभी क्षेत्रों में होता है। रूपरचना के परिवर्तन के कारण योगात्मक संस्कृत भाषा हिन्दी तक पहुॅचते–पहुॅचते अर्ध–अयोगात्मक हो गयी, वाक्य विन्यास मे भी परिवर्तन हुआ और पदक्रम जरूरी हो गया। भाषा की परिवर्तनशीलता केवल समय तक ही सीमित नहीं है। स्थान के साथ–साथ उनका स्वरूप भी बदलता है।

➢ भाषा व्याकरण द्वारा नियन्त्रित होती है।

ऊपर कहा गया है कि भाषा नित्य परिवर्तनशील है। प्रयत्नलाघव, अज्ञान और अपूर्ण अनुकरण के कारण उसमें निरन्तर परिवर्तन होता रहता है परन्तु व्याकरण इस परिवर्तन को नियंत्रित रखता है। अपनी स्वाभाविक प्रवृति के कारण भाषा परिवर्तन और स्थिरीकरण परम्परा विरोधी प्रतीत होते हैं, परन्तु भाषा के संदर्भ में दानों साथ–साथ काम करतें हैं। इन दोनों में संधर्ष चलता रहता है। अंतिम विजय परिवर्तन की

ही होती है किन्तु स्थिरीकरण उसकी गति का नियमन करता है और फलस्वरूप परिवर्तन मन्द गति से होता है।

➢ प्रत्येक भाषा की भौगोलिक और ऐतिहासिक सीमा होती है।

प्रत्येक भाषा की स्थान और काल की दृष्टि से सुनिश्चित सीमाएँ होती हैं। जैसे पंजाबी की सीमाएँ, पंजाब, बगला की बंगाल, तथा गुजरात प्रदेश की राजनैतिक सीमाओं तक व्याप्त है। हमारे देश में भाषावार प्रान्त रचना हुयी है। अतः भाषाओं की सीमाओं को लेकर कोई संभ्रम की स्थिति नहीं है। परन्तु यदि ऐसा न होता तो भी भाषाओं की सीमॉए स्वतः निर्धारित होती है। योरोप में तो अधिकतर भाषाएँ सम्पूर्ण देश में प्रयुक्त होती हैं। काल की दृष्टि से भी भाषाओं की व्यापकता सुनिशित होती है। यहॉ यह बात स्पष्ट करना भी जरूरी है कि भाषा की सीमाएँ राजनैतिक सीमाओं की तरह सुस्पष्ट नहीं होती।

➢ प्रत्येक भाषा का अपना स्वतन्त्र ढॉचा होता है।

ध्वनि, रूपरचना, वाक्यविन्यास और अर्थ की दृष्टि से हर एक भाषा की अपनी संरचना होती है। उदाहरणार्थ हमारा परम्रागत मूर्द्धन्य स्वर ऋ, मराठी में रि, वैदिक भाषा की ळ ध्वनि मराठी में विद्यमान है। हिन्दी में नहीं, रूप रचना में भी उपर्युक्त दोनों भाषाओं में स्पष्ट अंतर है। मराठी में पुलिलंग और स्त्रीलिंग के अतिरिक्त नपुंसंक लिंग भी विद्यमान है, हिन्दी में नहीं। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक भाषा के अपने व्याकरणिक नियम हैं, अपनी संरचना पद्धति है।

➢ भाषा कठिनता से सरलता की ओर जाती है।

प्रयत्नलाघव मनुष्य की सहज प्रवृति है, जो भाषा विकास पर भी लागू होती है। ध्वनि,रूप, वाक्यरचना आदि सभी क्षेत्रों में भाषा सरलता की ओर गतिमान रहती है। संस्कृत के संयुक्ताक्षर पाली और प्राकृत में दित्ताक्षरों में परिवर्तित हो गये और बाद में द्वित्व भी समाप्त हो गया। कर्म–कम्म–काम–अक्षि–अक्खि–ऑख आदि शब्दों का विकास क्रम इसका प्रमाण है। यह सब भाषा के कठिनता से सरलता की ओर बढ़ने के उदाहरण है।

➢ भाषा संयोगावस्था से अयोगावस्था की ओर जाती है।

यह भी प्रयत्नलाघव का ही एक रूप है। प्राचीन भारतीय आर्य भाषाएँ संयोगावस्था में थी। वाक्य में शब्दों का नहीं पदों का प्रयोग होता था। पदक्रम का कोई महत्व नहीं था। आज हिन्दी में "बालक पुस्तक पढ़ता है" आदि वाक्यों में "बालक" और "पुस्तक" पूरी तरह अयोगात्मक शब्द है। पदक्रम से वे कर्ता और कर्म बन गए हैं। यह भारतीय भाषाओं के अयोगात्मक अवस्था की ओर बढने का उदाहरण है। ॲग्रेजी भी अयोगात्मक भाषा नहीं है। परन्तु Ram killed Ravana जैसे वाक्यों में कर्ता और कर्म पूरी तरह अयोगात्मक हो गये हैं।

➢ भाषा का कोई अंतिम रूप नहीं होता।

पिछले पृष्ठों में कहा गया है कि भाषा नित्य परिवर्तनशील होती है। अतः उसका अंतिम रूप होना सम्भव ही नहीं। मराठी में बीसवीं शताब्दी में ही इतने परिवर्तन हुए कि पुरानी पीढ़ी के लोग इसे भाषिक अराजकता तक कहने लगे। अपवाद रूप में संस्कृत ही एकमात्र ऐसी भाषा है, जिसे पाणिनि के व्याकरण ने

इतना स्थिर कर दिया है कि शताब्दियों की यात्रा में भी उसमें कोई बहुत उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हुआ। कुछ भाषावैज्ञानिक कों का मत है कि संस्कृत एक मृत भाषा है। अतः वह एक रूढ़ीवाद ढ़ॉचें में बंधकर रह गयी है। परन्तु ऐसा मानना युक्तिसंगत नहीं है। संस्कृत आज भी जीवित है। इस प्रकार कहा जाए तो भाषा का कोई अंतिम रूप नहीं है।

4.3 हिन्दी पत्रकारिता पाठकों की दृष्टि में

पत्रकारिता को हम विशुद्ध सेवावृति का एक पवित्र कार्य मानते है। जो सत्य है सुन्दर है उसे समाचारों के माध्यम से जन–जन तक पहुॅचाता है। पत्रकारिता का काम है विरोध करना उसे नई दिशा देना। पर पत्रकारिता जब नई दिशा देना। पर पत्रकारिता जब नई दिशा नहीं देती तो व कुण्ठित हो जाती है। इस प्रकार एक पत्रकारिता को एक ओर अन्धकार से जूझना पड़ता है और दूसरी ओर प्रकाश को प्रोत्साहित कर उसके आयाम को विस्तार देना भी उसकी जिम्मेदारी है। अतः जो लोग समझते हैं कि पत्रकारिता केवल विरोध के लिए है उन्हे अपने दृष्टिकोण में बदलाव लाना पड़ेगा। पाठकों की दृष्टि से हिन्दी पत्रकारिता पर इस विचार–विमर्श को हम मोटे तौर पर तीन हिस्सों में बॉट सकते हैं। पत्र पत्रकार के उद्योग में पाठक ही राजा है। उसकी आशा आकांक्षाओं, मानसिक जरूरतों और पसंद–नापसंद की उपेक्षा करके कोई पत्रकार नहीं हो सकते तो यह प्रश्न उठता है कि आखिर हिन्दी पाठक क्या चाहते है? यह प्रश्न आसान है लेकिन इसका जवाब देना मुश्किल है। क्योंकि विविधताएॅ उसमें है, जितनी बौद्धिक और मानसिक जरूरतें उसकी हैं, उसको एक सॉचे में ढ़ालकर, एक सूत्र में पिरोकर या एक साथ बनाकर पेश नहीं किया जा सकता। क्षेत्र, प्रदेश, जाति, वर्ग, वाणी, शिक्षा, सामाजिक स्तर, सांस्कृतिक चेतना का

अंतर इतना विशाल है कि हिन्दी पाठको की जिज्ञासाओं, चिंताओं की कोई समस्थ परिकल्पना करना चाहे तो भले ही कर ले, लेकिन वह वास्तविक नहीं होगी।

दूसरी तरफ यह प्रश्न उठता है कि क्या आज का हिन्दी पाठक क्षेत्रीयवादी अपने अंचल में सिमटी रहनेवादी मात्र घर–घुस्सू है? क्या उसका देश, समाज और दुनिया की व्यापक समस्याओं से कोई सरोकार नहीं है? कुछेक क्षैत्रीय समाचार पत्रों में राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय घटनाओं और सामाजिक सांस्कृतिक जीवन को उद्वेलित करनेवाले समाचारों की अपेक्षा होने से यह भ्रांति पैदा हो सकती है। ऐसे भी कई समाचार पत्र है जो क्षेत्रीय आंचलिक समाचार पत्र है जो क्षेत्रीय आंचलिक समाचारों में पाठकों की रूचि को सफलता का मंत्र मानकर राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय, महत्व की सिर्फ एक–दो खबरे दे देते है। लेकिन गौण से गौण क्षेत्रीय खबर को छापकर जगह भरने और महत्वपूर्ण राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय घटना को दरगुजर कर देना की इस प्रवृति के पीछे बहुत हद तक समाचारों के मालिकों की कृपण मनोवृति भी रहती है।

राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय समाचार प्राप्त करने के लिए समाचार एजेंसी की सेवा लेना तथा समय–समय पर उसकी विवेचना करने में समर्थ पत्रकारों को रखना थोडा खर्चीला पडता है। हिन्दी समाचारपत्रों को राष्ट्रीय–अंतराष्ट्रीय समाचारों पर ज्यादा जगह बरबाद नहीं करना चाहिए। दरअसल पाठकों की जिज्ञासाओं से संबंधित जानकारी देना ही पत्रकारिता का दायित्व है। उसके मन में जिज्ञासाएँ जागना, ज्ञान–विज्ञान की नई खोजों का परिचय उसे देना भी पत्रकारिता का कर्तव्य है। इसी तरह न जाने कैसे यह भ्रांति फैली है कि हिन्दी पाठकों का सामाजिक नजरिया रूढ़ीवादी है। किंतु कतिपय रूढीग्रस्त पत्रकारों या पत्रों की मानसिकता सारे हिन्दी भाषी समाज की मानसिकता नहीं है। सन् 1993 में "नवभारत टाइम्स" की विशेष

संवादाता मणिमाला ने हिन्दी पाठकों और पत्रों के सामाजिक सरोकारों के बारे में सर्वेक्षण किया तो उन्होंने यह पाया कि हिन्दी पाठक सामाजिक अत्याचारों दहेज हत्याओं, जातिगत हिंसा की खबरे काफी ध्यान से पढते है और उनसे विचलित भी होते हैं। उनकी विकलता बाद तक बनी रहती है, जबकि अखबार उसके बाद के घटनाक्रम की प्रायः उपेक्षा कर देता हैं। हिन्दी पाठक जिज्ञासासारहित है, वह ज्यादा जानना नहीं चाहता, यह भ्रम हम जितनी जल्दी छोड़े उतना ही अच्छा है– पत्रकारिता के लिए भी और पाठकों के लिए भी।

हिन्दी समाचारपत्रों का भाग्य उनकी बढ़ती हुई पाठक संख्या से जुडा हुआ है। अभी तो देश में सर्वाधिक निरक्षरता, हिन्दी भाषी समाज में है। साक्षरता बढ़ेगी तो पाठक संख्या भी बढ़ेगी ही। प्रेस अपनी स्वतंत्रता या पाठकों की मॉग की दलील देकर सस्ती भावनाओं का सौदागर तो नहीं हो सकता। उसे होने भी नहीं देना चाहिए। द्वितीय प्रेस आयोग के शब्दों में कहें तो "समाचारपत्र सार्वजनिक महत्व के मामलों में नागरिकों को शिक्षित करने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है। वह उन्हे देश के भाग्य का निर्णय करनेवाले शासकों के रूप में अपनी भूमिका निभाने के लिए आवश्यक फैसले लेने में मदद करता है।"**1** गांधीजी का कहना है कि "समाचारपत्रों का एक लक्ष्य है जनता की भावनाओं को समझना और उन्हें अभिव्यक्ति देना, दूसरा लक्ष्य है लोगों में वांछनीय भावनाएँ जगाना और तीसरा लक्ष्य है लोगों में प्रचलित दोषों का निर्भयतापूर्वक सामने लाना।"**2**

अब उन जातियों समुदायों में हिन्दी सीखी जा रही है जो पहली बार साक्षर हो रहें है। वे प्रायः ऐसी जातियॉ और ऐसे समुदाय है जिनसे हिन्दी पत्रकारिता का बहुत निकट का संपर्क नहीं रहा है। उनकी भी साक्षरता का अभाव या कि पुरानी लीक पर

चलते रहने की वजह से हिन्दी पत्रों से खास सरोकार नहीं रहा है। लेकिन अब इन नवसाक्षर जातियों, वर्गो और समुदायों के साथ हिन्दी पत्रकार को संपर्क जोडना होगा और उनके सरोकारों को भी समझना पड़ेगा। हिन्दी पत्रकारिता का आत्मनिरीक्षण करना चाहिए और हमें अपने आपसे पूछना चाहिए कि अब तक हमारे सामाजिक पूर्वाग्रह क्या कर रहें है? और उनसे मुक्त होने के लिए हम क्या कर रहें है? बरसों पहले पत्रकारों के बारें में कहा जाता है कि पत्रकार घटनाओं के पीछे दोडनेवाला इतिहासकार होता है। वह समाजविज्ञानी की तरह आराम से काम नहीं कर सकता। हर क्षण उसे जल्दी से जल्दी अपनी सामग्री प्रेस में भेजने की चिंता रहती है। उसे संयत करने लायक समय भी उसके पास नहीं होता। फिर भी उसे हरदम यह तो याद रखना ही होता है कि वह जनतंत्र का चौथा पाया है। इस नाते उसकी कुछ जिम्मेदारियॉ हैं, दायित्व हैं। इनकी उपेक्षा करने से वह पाठकों और अपने समाचार पत्र का ही नहीं, खुद का भी नुकसान करेगा।

पत्रकार का धन, उसकी सबसे बढ़ी संपदा उसकी विश्वसनियता है। सूचनाएँ एवं समाचार स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय परिदृश्यों से जुड़े होतें हैं। यही नहीं उसमें राजनीतिक हलचलों के साथ आर्थिक–सामाजिक, उथल–पुथल और सांस्कृतिक गतिविधियों कस समावेश भी होता है। इसलिए यह कोरे समाचार ही नहीं देते वरन् उनकी व्याख्या एवं विश्लेषण के आधर पर वे जिस निष्कर्ष पर पहुॅचते हैं, उसे अपने पाठक समाज तक संप्रेषित करके घटना विशेष अथवा स्थिति विशेष के प्रति उसे मत निर्धारित करने में सहायता भी पहुॅचाते है। पाठक समाज की पढने की भूख को शांत करते हुए समाचारपत्र अपनी बहुरंगी सामग्री के द्वारा उनके मन प्रसादन के साथ उनकी रूची का परिष्कार एवं विकास भी करते हैं। समाज और राष्ट्र की समस्याओं को प्रदान करती है। हिन्दी पत्रकारिता के एक जाज्वल्यमान नक्षत्र माने

जानेवाले बाबू राव विष्णु पराडकर ने आज से पचहत्तर साल पहले पत्रकारिता के बारे में एक भविष्यवाणी की थी। उन्हेंने कहा था कि "आनेवाले समय में पत्रकारिता और पत्रों में चमक तो बहुत होगी, पर उसके भीतर की आत्मा नहीं बचेगी।"**3** इस प्रकार आज के सुविधा–संपन्न अखबारों में वह उर्जा कही नहीं झलकती जो पुराने जमाने के अखबारों में थी। सुविधा और संपन्न को खोजते हुए बहुत कुछ खोया है हमारी पत्रकारिता ने। इस बहुत कुछ का नाम है विश्वसनीयता। यह विश्वसनीयता यदि खत्म हो जाती है तो पत्रकारिता का मात्र इतना ही अर्थ होगा कि यह बुद्धिविलास का एक साधन है। यह स्थिति उन सबके लिए एक चुनौती है जो लिखे हुए शब्द की पवित्रता को स्वीकारते हैं और यह मानते हैं कि पत्रकारिता सिर्फ पेशा नहीं, एक रक्षा विशिष्ट पेशा है। इस विशिष्टता की रक्षा जरूरी है। इस बात को स्वीकार करने का मतलब होता है अपने भीतर धारा के विरूद्ध तैरने का संकल्प एवं साहस पैदा करना। ऐसा दुरसाहस करनेवाले ही इतिहास रचा करते हैं, शेष सब इतिहास का हिस्सा मात्र होतें है।

4.4 तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता

शताब्दियों पूर्व भारतवर्ष के उत्तरी भाग को उत्तरापथ और दक्षिणी भाग को दशिक्षापथ के नाम से भी जाना जाता था। भाषायी आधार की दृष्टि से देखें तो उत्तरापथ के क्षेत्रों में संस्कृत एक समुन्नत भाषा थी तो दक्षिणापथ में तमिल थी। दक्षिणापथ वे तेलगु, कन्नड और मलयालम इन भाषाओं के अलावा और भी अनेक भाषाएँ प्रचलन में थी और बोलियॉ तो सेकड़ों थीं और आज भी हैं। इन सबसे बावजूद दक्षिण में तमिल का ही प्रचलन सभी शताब्दियों से प्रमुख रहा है। भारत के पुरातन भाषाओं में तमिल भाषा का भी मुख्य स्थान माना जाता है। हिन्दी का प्रयोग उस समय तमिलनाडु में न तो समुचित प्रचारात्मक आधार मिला था न ही शिक्षा शिक्षालयों

में हिन्दी की कोई पूछ थी। यह सब उस समय सिर्फ मानवीय भावात्मक आवश्यकता के रूप में था। उन दिनों मद्रास नगर में साहूकारपेट में सनातन धर्म विद्यालय ही एक मात्र ऐसा विद्याालय था जिसमें प्रवासी नागरीकों के बच्चों को हिन्दी पढाई जाती थी। राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा से पूर्व हिन्दी साहित्य सम्मेलन हिन्दी पढनेवाले लोगों को हिन्दी का ज्ञान कराता था। लोगों का ध्यान इस राज्य में पहले गॉधी जी के आगमन से हुआ। इससे पहले तमिलनाडु में हिन्दी का प्रचार–प्रसार और जनरूची को जगाने में हिन्दी साहित्य सम्मेलन की अहम् भूमिका रही है। किसी भाषा के समुचित विकास और प्रचार के लिए उस भाषा की गहराई को जानना पडता है।

इस बात को समझते हुए उत्तर से दक्षिण में आए हुए लोग हिन्दी पत्रकारिता और पत्रिकाओं के प्रकाशन की ओर आगे बढ़े। "जहॉ तक तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास का सवाल है इसकी शुरूआत डॉ.एन.एन.हार्डिकर के अंग्रेजी और हिन्दी में प्रकाशित होनेवाले पत्र "स्वयं सेवक" से मानी जानी चाहिए।"**4** इसी पत्रिका को तमिलनाडु से हिन्दी में भी प्रकाशित होनेवाली पहली पत्रिका अगर कहा जाए तो गलत नहीं होगा। तमिलनाडु दक्षिण में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए गॉधीजी के आने पर जिन लोगों ने हिन्दी के लिए अपने को समर्पित कर दिया था उनमें क्षेमानन्द राहत का नाम सदा ही श्रद्धा से लिया जाता रहेगा। हिन्दी प्रेमी, साहित्य प्रेमी, नरसिंहदास अग्रवाल को प्रेरणा प्रदान कर एक हिन्दी पत्र का प्रकाशन करने के लिए तैयार किया और अब वह निकला तो एक साप्ताहिक रूप में निकला। उसका नाम रखा गया "भारत तिलक"। 1921 में प्रकाशित इसे पहले हिन्दी साप्ताहिक के प्रकाशक थे–नरसिंह दास अग्रवाल और संपादन क्षेमानन्द राहत।

"स्वयं सेवक" चूंकी अँग्रेज़ी और हिन्दी में या इसलिए जुभारू तरीके से यह दस वर्ष तक प्रकाशित होता रहा। इसी अवधि में हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिकारियों ने हिन्दी प्रचार को और गति प्रदान करने के लिए एक पत्रिका प्रकाशित करने की आवश्यकता महसूस की। जनवरी 1923 से "हिन्दी प्रचारक" मासिक के नाम से काफी तैयार के साथ एक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ। इस पत्रिका के आने से दक्षिण में हिन्दी का अच्छा प्रसार–प्रचार हुआ। यहाँ तक आते–आते यह पत्रिका पाक्षिक से मासिक हो गई थी। लेकिन हिन्दी प्रेमियों और प्रचारकों के लिए यह पत्रिका प्रेरणादायक होने के साथ–साथ लोकप्रिय भी हो चुकी थी। पाक्षिक से मासिक बनाये जाने के बाद "हिन्दी प्रचारक" में विस्तार की दृष्टि से हिन्दी प्रचारकों और विद्यार्थियों के लेख आदि की प्रकाशित होने लगे, जिससे लेखन के प्रति दक्षिण हिन्दी के प्रेमियों, प्रचारकों और विद्यार्थियों को प्रेरणा मिला। " हिन्दी प्रचारक" का मूल उद्देश्य हिन्दी प्रचार का था, साहित्य प्रचार नहीं। इस प्रकार के पत्रिकाओं के साथ तमिलनाडु में समय–समय पर निम्मलिखित पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हुई जैसी दक्षिण भारत, चन्दामामा, हिन्दी पत्रिका, हमदम, संगम संदेश, दक्षिण राजस्थानी पोस्ट विचार वटिका आदि। इसमें संदेह नही की तमिलनाडु में हिन्दी के प्रति मोह ही हिन्दी प्रचारक ने नहीं बढ़ाया, बल्कि लोगों को हिन्दी में लिखने की प्रेरणा भी दी। तमिलनाडु में मात्र मद्रास से हिन्दी बल्कि अन्य नगरों से भी समय–समय पर स्कूलों, कालेजों तथा संस्थाओं की ओर से वार्षिक तौर पर पत्रिकाएँ प्रकाशित होती रही थी।

तमिलनाडु की राजधानी मद्रास का जहाँ तक सवाल है इस मानगर से पत्रिकाएँ हिन्दी में निकलती रही, बन्द होती रही। फिर भी पत्रिकाओं का क्रम बना ही रहा जो एक शुभ बात है। इस प्रकार तमिलनाडु की हिन्दी पत्रकारिता की धारा में साप्ताहिक,

पाक्षिक, मासिक, त्रैमासिक आदि सभी प्रकार की पत्र एवं पत्रिकाएँ निकली लेकिन हिन्दी का दैनिक पत्र विधिवत नहीं निकल पाया। "1977–78 में कुछ तमिल भाषायों ने श्री लक्ष्मीकान्त सरस के सहयोग से "दक्षिण टाईम्स" नाम से एक हिन्दी दैनिक के प्रकाशन की योजना बनायी।"**5** लेकिन कुछ समास्याओं के कारण इसे सफलता की ओर न ले जाया गया। आज तमिलनाडु में हिन्दी का प्रचार–प्रसार इतना हो चुका है कि स्कूल कालेज से जितनी भी पत्रिकाएँ प्रकाशित होती है उनमें हिन्दी अनिवार्य सी रहती है। इनमें छात्रों के लेख, कहानियॉ और कविताएँ आदि आने वाले समय को आशावान बनाते है। जहॉ तक व्यावसायिक पत्र–पत्रिकाओं का सवाल है आज स्थितियॉ कुछ इस तरह से बदल चुकी है कि तमिलनाडु में हिन्दी की व्यावसायिक पत्रकारिता का भविष्य बहुत उज्जवल हैं।

4.5 हिन्दी पत्रकारिता की चुनौतियॉ

आजकाल देश में जितने भी पत्र निकलते है, उनमें हिन्दी में सबसे अधिक संख्या में पत्र निकलते हैं। हिन्दी के पत्र भारत के राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में निकलते है। हिन्दी पत्रकारिता की उन्नती कुछ इस प्रकार से हो रही है। लेकिन आज की हिन्दी पत्रकारिता यह स्थान नहीं ग्रहण कर सकी है, जो किसी राष्ट्र की राष्ट्रभाषा या राजभाषा में प्रकाशित पत्रों का होता है। इसके सबसे बडा कारण तो यह है कि यद्यपि भारतीय संविधान में हिन्दी को संघ की राजभाषा स्वीकार किया गया है, पर वस्तुतः हिन्दी संघीय राजभाषा नहीं बन पाई है। आज पत्रिकारिता की एक दुविधा से धिरती नजर आ रही है। इसके प्रमुख कारण हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में होनेवाली समस्याएँ है। हिन्दी पत्रकारिता को मूल रूप से उन्ही सब समस्याओं का

सामना करना पड़ता है जो अन्य भाषाओं की पत्रकारिता के समक्ष हैं। परन्तु उसकी कुछ अपनी परम्पराएँ हैं, पिछले 160 वर्षो का इतिहास है अपने मापदण्ड हैं जिनको कायम रखना प्राचीन थाती को सुरक्षित रखना उसका एक मुख्य कर्तव्य हो जाता है। हिन्दी पत्रकार के समक्ष सबसे बडा प्रशन तो यह है कि वह जिस भाषा में लिखता है, वह भाषा बोलनेवालों की दृष्टि से संसार की तीसरी भाषा है। इस भाषा के पत्र भारत के 22 राज्यों और केन्द्रशासित प्रदेशों में से प्रकाशित होते हैं और संसार के 100 विश्वविद्यालयों में जो भारत से बाहर स्थित हैं हिन्दी पढाई जाती है। हिन्दी का यह विस्तार, हिन्दी का आकार जहॉ उसकी पत्रकारिता को आसीम शक्ति देता है, वहॉ पर पत्रकारों को एक बंधन में भी डाल देता है। जहॉ तक राष्ट्रीयता का प्रश्न है, वह हिन्दी पत्रकारिता की घुट्टी में है। पहला हिन्दी पत्र कलकत्ता से निकला था। कलकत्ता उस समय भारत की राजधानी थी और यह स्वभाविक ही था कि "उदन्त मार्तण्ड" वहॉ से ही उदय हुआ। हिन्दी क्षेत्रों के उत्साही लोग आज से 160 वर्ष पूर्व की सामाजिक और भौगोलिक कठिनाईयों का सामना करते हुए कलकत्ता में बसे हुए थे। "उदन्त मार्तण्ड" ही भारत का अकेला हिन्दी पत्र नहीं था उसके साथ "जगछीपक भास्कर" नामक पत्र भी कलकत्ता से निकला, यह बंगला और हिन्दी भाषा में था। इसे बाद में हिन्दी का प्रथम "समाचार सुधारवर्षण" कलकत्ता से निकला। इस प्रकार से अनेक पत्रों का विकास कलकत्ता से प्रारम्भ हुआ था। यह धारा हिन्दी पत्रकारिता की मुख्य धारा रही है। इस समय देश में जितने भी पत्र निकलते थे सब में हिन्दी पत्रों की ही संख्या अधिक थी। प्रसार में भी हिन्दी पत्रों का प्रसार अन्य सभी भाषाओं से अधिक हुआ करता था। हिन्दी पत्र भारत के 21राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों में निकलते है, जिसमें जम्मू–कश्मीर से लेकर केरल, तमिलनाडु और अंड़मान तक के क्षेत्र हैं। इस प्रकार से यह कहा जा सकता है कि हिन्दी पत्रकारिता की उन्नती हो रही है। परन्तु आज भारत की हिन्दी पत्रकारिता यह स्थान ग्रहण कर

सकी है, जो किसी राष्ट्र की राष्ट्रभाषा या राजभाषा में प्रकाशित पत्रों का होता है। इसका सबसे बडा कारण तो यह है कि यद्यपि भारतीय संविधान में हिन्दी को संध की राजभाषा स्वीकार किया गया है, पर वस्तुतः हिन्दी संधीय राजभाषा नहीं बन पाई है।

सरकारी कार्यालयों की अधिकांश फाइलों, सरकारी कर्मचारी अॅग्रेज़ी के माध्यम से सोचते विचारते है। इतना ही नहीं सर्वोच्च न्यायालय की कारवाईयॉ भी अॅग्रेज़ी में होती है इसलिए आज समाचार प्रप्ति का सबसे बडा साधन अंग्रेजी है। जब तक इस आधारभूत स्थिति में परिवर्तन नहीं होता, जो लोग हिन्दी समाचार पत्रों के लिए समाचार लिखते हैं, पृठिभूमि लिखते है, उनके सामने कठिनाईयॉ उपस्थित रहती है। इस प्रकार के सामग्री को अंग्रेज़ी में इक्ट्टा करना पडता है और उसे हिन्दी में अनुवादित करके देना पड़ता है। इस तरह अनुवाद के कारण वह अपनी भाषा का आकर्षण खो देता है। हिन्दी पत्रकारिता को पूर्ण विकास का अवसर तभी मिलेगा, जब हिन्दी संघीय राजकाज की सही मानों में भाषा होगी। इस कमी को दूर करने का उपाय यह है कि दिल्ली में हिन्दी में छपने वाले पत्र अपने यहॉ पर संवादाताओं की ऐसी बड़ी टोली रखें, जो हिन्दी में समाचार दें। पर, जिस प्रकार का समाचार संघठन है जिसकी हम आगे चर्चा करेंगें, उसमें यह संभव नहीं है। एक बात यह भी कहा जाता है कि हिन्दी पत्रों को विज्ञापन से आय कम होता है जिसका असर यह होता है कि उनमें छपने के लिए कम पृष्ठ उपलब्ध होतें है और इसके परिणामस्वरूप हिन्दी पत्र सारे समाचार उतने विस्तार के साथ नहीं दे पाते, जितने अंग्रेज़ी पत्रों में होती है, चूंकि हिन्दी पत्रों में उतनी सामग्री नही मिलती, जितनी अंग्रेज़ी पत्रों में होती है, तो एक तो उन्हे हीन दृष्टि से देखा ही जाता है, उनका प्रसार भी उतना नहीं हो पाता जितना होना चाहिए।

पत्रकारिता की विधा अब बहुत जटिल हो गई है। एक संवादाता को और उप–संपादक को भी यह जानना जरूरी है कि संसार में कितने देश हैं, किसकी कौन सी राजधानी है, वहॉ की संसद का क्या नाम है और वहॉ की शासन–व्यवस्था किस प्रकार की है। आर्थिक, वैज्ञानिक और तकनीकि विषयों का ज्ञान भी जरूरी है, क्योंकि ये सब अब समाचार के प्रमुख विषय बनते जा रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पत्रकारिता की चुनौतियॉ – गणेश मंत्री – पृ.सं : 84

2. पत्रकारिताः सिद्धांत एवं प्रयोग – डॉ.लक्ष्मीकान्त पाण्डेय – पृ.सं : 85

3. पत्रकारिता की चुनौतियॉ – गणेश मंत्री – पृ.सं : 9

4. हिन्दी पत्रकारिताः विविध आयाम – डॉ.वेदप्रताप – पृ.सं : 246

5. भारत में हन्दी पत्रकारिता – डॉ.रेमेश जैन – पृ.सं : 264

5.1 पत्रकारिता की समस्याएँ और समाधान

पत्रकारिता देश में पत्रकारिता का एक विशेष भूमिका क रूप में हमें देखने को मिलती है। आज पत्रकारिता समाज में एक महत्वपूर्ण साधन बन चुका है। आज की पत्रकारिता एक आतंक और दुविधा से घिरती नज़र आ रही है। इसका प्रमुख कारण है पत्रकारिता के क्षेत्र में होनेवली समस्याएँ विशेषकर हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में होनेवाली समस्याएँ जो कि निम्नलिखित है–

- पत्रकारिता और हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में होनेवाली समस्याओं में सबसे पहला पूँजी का अभाव है। वर्तमान प्रौद्योगिक इतनी तीव्रगति से बढ़ रही है कि अन्य पत्रों के समान होने के लिए हमेशा कुछ पूँजीनिवेश जरूरी हो जाता है। पूँजी निवेश के बारे में पहले ही स्पष्टीकरण दिया था।
- आजकाल संपादक संस्थान में भी गिरावट आयी है। जहॉ कोई इजारेदार संपादक है वहॉ पत्रकारिता दासत्व की जिन्दगी जी रही है। आज हिन्दी पत्रकारिता के मापदण्ड गिरने का प्रधान कारण यह है कि जिनके ऊपर पत्रों के संचालन दायित्व है, वे पत्रों को मुनाफा कामने, मंत्रियों तक पहुँचने या सत्ता के स्त्रोत से अधिक कोई महत्व ही नहीं रखते। यह समस्या अंग्रेज़ी पत्रों की अपेक्षा हिन्दी पत्रों में अधिक है।
- आजकल पत्रकारिता मिशन या प्रोफेशन बन गया है। यह भी एक समस्या है। पत्रकार माफियाओं से समाज की रक्षा का नया प्रश्नवाचक चिंह हमारे सामने हें। अब पत्रकारों में एक वर्ग एसा पैदा हो गया है जो खबर छापने की ताकत का दुरूपयोग कर राजनीतिक लोगों, अधिकारियों, माफियाओं और समाज विरोधी तत्वों से मिलकर भयादोहन की कमाई में लिप्त है। ये लोग नियुक्तियों, स्थानन्तरणों, पदोन्नत्तनियों आदि में दिलचस्पी लेकर पैसा कमाते हैं।

- अगली समस्या है भाषा एवं शैली की समस्या जो लोग इस में आ रहे हैं, उन्हे एक तरफ अच्छी सिखाना जरूरी है। दूसरी ओर उन्हें आज की जटिल पत्रकारिता आनी चाहिए और पत्रकारिता से संबंध जो विषय है, जिनके बारे में लिखा जाता हैं, उनका भी ज्ञान होना चाहिए। पत्रकारिता में शैली को भी ध्यान देना पडता है। अर्थात पत्र को जटिल विषय सरल से सरल सुबोध शैली में मनोरंजक ढ़ंग से प्रकट करना चाहिए। जिस दिन यह हो जाएगा, उस दिन हिन्दी पत्रों की कुछ समस्याएँ भी कम हो जाएँगी।
- नवीन तकनीकों और वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रवेश भी एक समस्या है। यह विशेषकर पत्र संपादकों के समक्ष चुनौतियॉ प्रस्तुत कर दी है। देश–विदेश में क्षण–क्षण घट रही घटनाओं, सांस्कृतिक, राजनीतिक उथल–पुथल युद्ध की भयानकताओं के दृश्य जब रात को आबालवृद्ध अपने टी.वी सेट पर देख लेते हैं और इससे रोमांच और आकर्षण का मज़ा लेते हैं। फिर दूसरे दिन सुबह के अखबारों में कितने पाठक दिलचस्पी रखते हैं।

उपर्युक्त समस्याओं का समाधान भी जरूरी होगा। फिर भी यह प्रश्न उठता है कि वह समस्याएँ कब तक चलते रहेंगे? इसको जानने के लिए निम्नलिखित समाधन को भी देखना होगा।

- पहला समाधान यह है कि पाठकों की आवश्यकताओं और जिज्ञासाओं के बिन्दुओं का पता लगाकर पत्र की विषय सामग्री जुटाने की प्रक्रिया चलना। इससे सूचना फैलाने की गति तो बहुत तेज हुई है।

- दूसरी बात यह है कि पत्रकारों का भाषा चुस्त होना चाहिए। इससे वह तर्क और भावना का पुट देकर विषयों पर रोशनी डाल सकते हैं।
- समाचारपत्र और पत्रकार को जनमहितों के प्रहरी होना चाहिए। उनको पाठकों के प्रति उत्तरदायी और जिम्मेदारी को निभाना चाहिए।
- पत्रकार को अपनी कर्तव्यों का बोध होना चाहिए। समाज को उच्चस्तर पर बोध होना चाहिए। समाज को उच्चस्तर पर बिठाने के लिए पत्रकार को अपनी वाणी होनी चाहिए जो एक योद्धा अपने तलवार का इस्तेमाल करते हो।
- नई तकनीकों के प्रभाव को कुछ हद तक समाचार पत्र कर सकता हैं, क्योंकि समाचारपत्र में घटनाओं का विस्तृत विवरण दिया जाता है। लेकिन दृश्य–श्रव्य माष्यमों में हम उतना ध्यान नही दे सकते जितना समाचार पत्रों में दिया जाता है। क्योंकि उसमें बीच–बीच में विज्ञापन आने से हमारा धयान हट जाता है। यह एक बात कहा जा सकता है कि दृश्य और श्रव्य माध्यमों की चुनौतियॉ के बावजूद समाचार पत्र आज भी जीवनोपयोगी बने हुए है और उनकी प्रसार संख्या बढ़ रही है। महात्मा गॉधी ने "माई पिक्चर ऑफ फ्री इंडिया" में कहा था समाचार पत्रों के शब्दों ने लोगों के बीच गीता, बाईबिल और कुरान का स्थान ले लिया है। उनके लिए लिखे हुए अक्षर ब्रह्मवाक्य के समान हैं।

सामान्यतः पत्रकारिता का जनसंचार के अन्य माध्यमों से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपने पाठकों, और दर्शकों को नवीनतम सत्य की सूचना देंगे, उनसे उनका साक्षात्कार करायेंगे, उनके लिए ज्ञानवर्धक सामग्री प्रस्तुत करेंगें और उनकी जिज्ञासाओं की शांति के लिए तथ्यपरक सूचनाऍ देंगे, जनरूची के नियमन और परिवार की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी निभायेंगे और अनन्तः उनके मनोरंजन की सामग्री भी प्रस्तुत

करेंगे। पत्रकारिता के क्षेत्र में हो रहे चुनौतियों का समाधान कुछ हद तक पाठक वर्ग ही कर सकते हैं।

5.2 विभिन्न प्रकार के पत्रकारों से साक्षात्कार

मैंने अपने लघु शोध कार्य के लिए अनेक पत्रकारों से प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार किया। पत्रकारिता के क्षेत्र एवं हिन्दी पत्रकारिता के बारे में उन्होंने अपने–अपने सुझाव एवं राय भी दिए। सर्वप्रथम कोयम्बतूर के "राजस्थान पत्रिका" के संपादक एवं पत्रकार श्री राहुल शर्मा जी से साक्षात्कार किया उन्होंने पत्रकारिता एवं हिन्दी पत्रकारिता के बारे में इस प्रकार बताया –

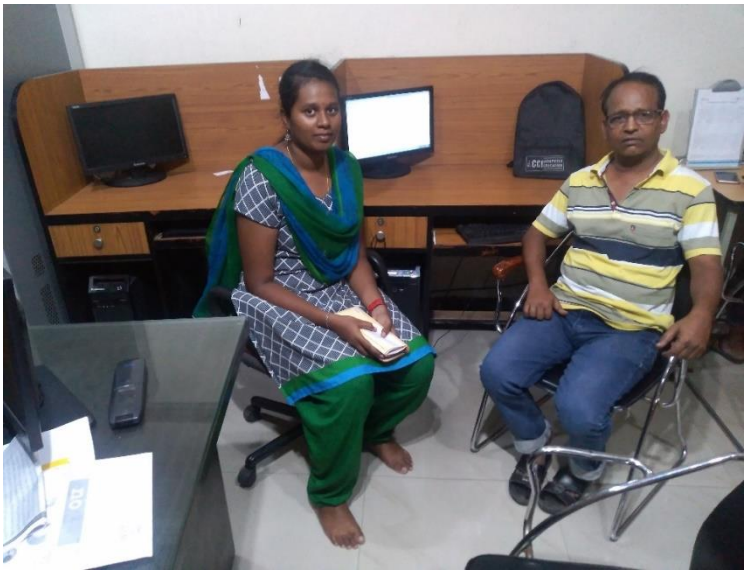

"राजस्थान पत्रिका" के संपादक एवं पत्रकार श्री राहुल शर्मा जी से साक्षात्कार

- उनके अनुसार एक सफल पत्रकार बनने के लिए निम्न विषयों का होना आवश्यक है जैसे भाषा पर पकड़, पढ़ने और सुनने की क्षमता, सभी विषयों में रूची एवं एक ऐसा व्यक्ति जो बदलाव का इच्छुक हो।
- पत्रकारिता जनता की इच्छाओं को जागरूक करने का एक सशक्त साधन है।
- पत्रकारिता न वरदान है और न अभिशाप, वह एक सहज जानकारी प्रदान करने का साधन है।
- तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता के बारे में उनका कहना है कि आज की प्रवृत्तियों में बदलाव चल रहा है, नई पीढ़ी को अब हिन्दी में रूची नहीं है, और इस प्रकार से हिन्दी पत्रकारिता का दक्षिण में कोई खास भविष्य नहीं हैं।
- एक सफल पत्रकारिता के लिए एक अच्छे पत्रकार का होना भी आवश्यक है। कहा जाता है कि पत्रकारिता यदि जिस्म है तो पत्रकार उसकी जान।
- पत्रकारिता के लिए पत्रकार की भूमिका भी आवश्यक है, उनका कहना है कि पत्रकार किसी भी संस्था का हो, महत्वपूर्ण होता है। एक पत्रकार होने के नाते हर पल अपनी जिम्मेंदारियों का एहसास होता है। वह गलत चीजों के प्रति चुप नहीं बैठता।
- पत्रकार अपनी खबर के लिए जीजान लगा देता है। वह पत्रकार ही है, जो समाज और देश की सही तस्वीर सभी के समक्ष रखता है।
- यह आवश्यक है कि पत्रकार समय–समय पर आत्मावलोख करते रहें। ताकि अभिव्यक्ति की आज़ादी बची रहे और इस आज़ादी का दुरूपयोग भी न हो पाए।
- तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता की स्थिति को बदलने के लिए हमें यहॉ के स्कूलों में बच्चों को बचपन से ही तमिल के साथ हिन्दी को भी पढ़ाना चाहिए

जिससे बच्चों में हिन्दी भाषा के प्रति रूची उत्पन्न होगी और दक्षिण में हिन्दी पत्रकारिता का विकास बढ़ेगा।

इसके अतिरिक्त कोयम्बतूर के "टाइम्स ऑफ इंडिया" के संवादाता प्रतीक्षा दामोदरसामी जी पत्रकारिता पर इस प्रकार अपनी राय बतायी है –

"टाइम्स ऑफ इंडिया" के संवादाता प्रतीक्षा दामोदरसामी जी के साथ साक्षात्कार

- Journalism is something which creates awareness on issue and spread information to the general public in an accessible and affordable medium.

- The secret of a successful Journalist is the ability to make and build contacts and sources, patience and thirst for knowledge.

- The secret of a successful Journalist is the ability to make and build contacts and sources, patience, thirst for knowledge and ability to analyse data and figure out what interests readers the most.
- Journalism is the reflection of our society.
- The main moto of Journalism is to educate people with valuable information.
- A Journalist with the knowledge of intergrity is a great asset to the field of Journalism.

सर्वेक्षण हेतु कुछ छात्राओं के साथ वार्तालाप

इस प्रकार मैंने विभिन्न भाषाओं के पत्रकारों से साक्षात्कार और कुछ छात्राओं से सर्वेक्षण कर पत्रकारिता को और अधिक एवं स्पष्ट रूप से समझा।

(क) प्रश्नावली

QUESTIONNAIRE

नाम :

NAME

आयु :

AGE

योग्यता :

QUALIFICATION

उद्योग :

OCCUPATION

पता :

ADDRESS

1. आपको सबसे अच्छा मीडिया कौन सा लगता है? इस मीडिया को आपने क्यों चुना? कारण स्पष्ट कीजिए? (समाचार पत्र, टेलिविज़न, रेडियो) आदि।

Which media do you prefer the most? Specify the reason for choosing this media? (Newspaper, television, Radio) etc.

2. एक सफल पत्रकार बनने का राज़ क्या है?

What is the secret of a successful Journalist?

3. पत्रकारिता के क्षेत्र में आपको किस प्रकार की समस्याओं से झूझना पडा?

What are the problems faced by you in the field of journalism?

4. समाचार पत्रों को छापने का प्रमुख उद्देश्य क्या है?

What is the central idea behind publishing a newspaper?

5. क्या आपके विचार में समाचार पत्रों में राजनीति या राजनीतिज्ञ विशेष अदा निभाते हैं? अगर हॉ तो कारण स्पष्ट कीजिए?

Do you feel the politics or politicians play a vital role in the newspapers? If 'Yes', please give the reason.

6. समाचार पत्र समाज में अपनी भूमिका किस प्रकार अदा करते हैं?

What kind of role does the newspapers play in society?

7. स्वतंत्र पत्रकारिता के बारे में आपके विचार क्या है?

What is your opinion about freelance journalism?

8. समाचार पत्रों पर टेलिविज़न का प्रभाव कैसा है?

What is the impact of television on newspapers?

9. हिन्दी पत्रकारिता के बारे में आपके विचार क्या है?

What is your opinion about Hindi Journalism

10. क्या पत्रकारिता समाज का प्रतिबिंब है?

Is Journalism a reflection of society?

11. पत्रकारिता युवा वर्ग के लिए वरदान है या अभिशाप? स्पष्ट कीजिए।

Is Journalism a boon to the society?

12. क्या आज की पत्रकारिता में सभी मूल्य विद्यामान हैं? स्पष्ट कीजिए।

Is today's journalism value oriented?

13. आपकी राय में पत्रकारिता में कैसे बदलाव लाने चाहिए?

In your opinion what changes are to be brought in journalism?

14. भविष्य में पत्रकारिता की स्थिति कैसी होगी?

What will be the future of journalism?

15. पत्रकारिता को अग्रसर बनाने में मीडिया का क्या योगदान है?

What is the contribution of media in developing journalism?

16. हिन्दी पत्रकारिता के विषय में आपका सुझाव क्या है। विशेषकर तमिलनाडु में?

What is your opinion on hindi journalism especially in Tamilnadu?

17. पत्रकारिता समाज में अपनी भुमिका किस प्रकार अदा करते हैं?

What kind of role does journalism play in the society?

18. पत्रकारिता के क्षेत्र में नई तकनीकों के प्रयोग पर आपके विचार क्या है?

What are your views about new technologies used in the field of journalism?

19. आपकी राय में पत्रकारिता में कैसे बदलाव लाने चाहिए?

In your opinion what changes are to be brought in journalism?

20. आधुनिक युग में हिन्दी पत्रकारिता कि स्थिति किस प्रकार है?

What is the position of hindi journalism in the present era?

(ख) सर्वेक्षण

मैं ने इस पॉचवे अध्याय में पत्रकारों और साधारण जनता से किये गये सर्वेशण का सारभूत निष्कर्ष एवं उसका मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। इस सर्वेशण हेतु एक प्रश्नावली भी तैयार की गयी थी। यह प्रश्नावली निम्न बातों का समावेश करती है। पत्रकारिता का जनता पर प्रभाव, पत्रकारिता किस प्रकार की होनी चाहिए, पत्रकार की योग्यताऍ, पत्रकारिता के क्षेत्र में हिन्दी पत्रकारिता की स्थिति, पत्रकारिता का भविष्य आदि बातों को स्पष्टीकृत किया है। यह प्रश्नावली द्विभाषिक है। मैंने अपने सर्वेक्षण में बीस पत्रकारों और आम जनता के लोगों से साक्षात्कार किया। इस सर्वेक्षण के द्वारा मुझे हिन्दी पत्रकारिता की मौजूदा स्थिति और हिन्दी पत्रकारिता का विकास कहॉ तक हुआ है, इसको समझने में सहायता मिली है।

इस सर्वेक्षण द्वारा मुझे पत्रकारिता के विषय में पत्रकारों से निम्न जानकारियॉ मिली हैं –

- पत्रकारिता जनता की अभिव्यक्ति का सशक्त एवं लोकप्रिय साधन है।
- पत्रकारिता के क्षेत्र में पत्रकारों को तमाम दबावों के बावजूद भी अपनी अंतरात्मा और समाज को धोखा दिए बिना, अपनी परवाह किए बिना समाज के सामने सत्य को प्रकट करना होता है।
- सामज को उचित दिशा निर्देशित करना पत्रकारिता का दायित्व होता है।
- तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता का स्थान कुछ विशेष रूप से प्रमुख नहीं है, क्योंकि दक्षिण में हिन्दी भाषा का ज्ञान अधिक न होने के कारण हिन्दी पत्रकारिता का विकास विशेष रूप से नहीं है।

- पत्रकारिता के क्षेत्र में आजकल संचार क्रांति का प्रवेश बढ़ रहा है। समाचार पत्रों के पत्रकारों को इसका सामना करना एक चुनौती बन गया है।
- पत्रकारिता आज एक सशक्त माध्यम है जो जनता तक विचारों को स्पष्ट रूप से पहुॅचाने का कार्य करता है।

इस प्रकार मैंने आम जनता से भी पत्रकारिता के बारे में निम्न जानकारियॉ प्राप्त की है –

- आम जनता की दृष्टि से पत्रकारिता खेल, चुनाव, शिक्षा एवं रोजगार संबंधी विष्यों की जानकारी देनेवाले साधन के रूप में माना गया है।
- कुछ लोगों की राय में यह विज्ञापन की जानकारी भी दनेवाला एक सशक्त माध्यम हैं।
- जनता की दृष्टि से यह स्पष्ट होता है कि तमिलनाडु में हिन्दी भाषा एवं हिन्दी पत्रकारिता से लोग अज्ञात है।
- जनता का कहना है कि पत्रकारिता आजकल एक उद्योग बन गया है।
- समाज की दुर्बलताओं, कुरीतियों, अंधविश्वासों के विरूद्ध समाज को जागरूक बनाने में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

उपर्युक्त तथ्यों का विश्लेषण एवं मूल्यांकन करने के पश्चात् मुझे यह विधित हुआ है कि पत्रकारिता का विकास एक सीमा तक तो हुआ है किंतु उदात रूप से अभी अपनी चरम सीमा पर नहीं पहुॅच पायी है।

पत्रकारों का पत्रकारिता के प्रति काफी जटिल एवं गंभीरतापूर्वक कार्य है। उन्हें अपने दायित्व को निभाने में विशेष कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। यह एक धैर्य एवं साहस का कार्य है। समय के साथ समाज को भी साथ लेकर चलना पड़ता है। समाज पत्रकारिता एवं पत्रकार इन तीनों में सामंजस्य बनाकर चलाना पड़ता है।

उपसंहार

उपसंहार अपने श्रमपूर्वक एवं निष्ठा के साथ किए गए कार्य का सार है। इसमें कुल पॉच अध्याय हैं। मेरा यह लधु शोध प्रबंध पत्रकारिता का उद्‌भव और विकास की सारभूत प्रणाली का प्रसतुतिकरण है। इसमें पत्रकारिता एवं हिन्दी पत्रकारिता किस प्रकार आज तक विकसित हुई है इसका ब्योरा प्रस्तुत किया गया है।पत्रकारिता समाज का अंग ही नहीं बल्कि वह समाज की आत्मा भी है। पत्रकारिता जैसे शक्तिशाली माध्यम का उपयोग अन्य व्यवसायों की तरह मुनाफे में इजाफा करने की भावना से नहीं किया जा सकता। सही अर्थों में पत्रकारिता वह है जो तथ्यों को ठीक से जॉचती–परखती है, उन्हें सही ढंग से समाज के सामने रखती हैं, घटनाओं की तह तक जाकर उनका निर्भीकता से विश्लेषण करती है और अपने से असहमति रखनेवाली व्यक्तियों और वर्गों को साधनहीनों और वांछितों को अपने विचार अभिव्यक्त करने का अवसर देती है।

हिन्दी पत्रकारिता का विकास इतिहास ज्यादा पुराना नहीं है। हिन्दी पत्रकारिता का मूल आधार वैचारिकता है। इसकी जगह कोई नहीं ले सकता वैसे भी भारतीय लोकतंत्र का यह चौथा खंभा है। हिन्दी पत्रकारिता कोई ऐसी विकल्प पत्रकारिता नहीं हैं, जो अंग्रेजी की जगह लेने के लिए जन्मी है। वह भारतीय स्वाधीनता की आवाज़ रही है, लेकिन तमिलनाडु में हिन्दी पत्रकारिता का विकास कुछ अधिक नहीं हैं क्योंकि दक्षिण में हिन्दी भाषा का विकास कम है। वास्तव में पत्रकारिता अभिव्यक्ति का संपूर्ण विज्ञान है। पत्रकारिता की भाषा सरल, सुबौध एवं व्याकरनिष्ठ होती है। इससे जनता आसानी से ग्रहण भी करेंगी और साथ ही शुद्ध भाषा का ज्ञान भी अर्जित करती है।

पत्रकारिता जन–राशि का संचित कोश भी कहा जाता है। इतना तो तय है कि पिछले दस–पन्द्रह साल में हिन्दी पत्रकारिता, पहले से ज्यादा बेहतर तरीके से सामने

आयी है। हिन्दी पत्रकारिता में प्रोफेशनलिज्म की कमी है, जिसके साधन प्रयत्न करने पडेंगे। प्रसार संख्या या साख बढ़ाने के लिए नहीं बल्कि लाखों पाठकों से लगातार संपर्क स्थापित करने के लिए जरूरी है कि उस भाषा का इस्तेमाल करें, जो उन लोगों की बोलचाल की भाषा है। जब तक हम उस भाषा में नहीं लिखते जिसमें लोग अपने बहुत अनौपचारिक, क्षणों में बात करते हैं, तब तक पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य का संप्रेषण पूरा नहीं हो सकता। पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य संपूर्ण समाज में नव–संचार, सजीवता, जागरण, सक्रियता और गतिमयता के संदेश का प्रचार–प्रसार करना है। पत्र–पत्रिकाओं में समाज को प्रभावित करने की जो क्षमताएँ होती हैं उन समस्याओं का सशक्त स्थर अथवा प्रणेता पत्रकार है। आधुनिक युग में पत्रकारिता एक सरचनाशील विधा है। इसके बगैर समाज को बदलना असंभव है। आज के आधुनिक युग में पत्रकारिता का विकास युवा वर्ग के हाथों में ही है। पत्रकारिता के मूल को सींचने की जिम्मेदारी भी युवा पीढ़ी की ही है, क्योंकि मूल को सींचने से ही फलने–फूलने की उम्मीद बॅधती है। वैसे भी आधुनिक युग में आजकल पत्रकारिता का प्रयोग बहुत ही कम लोग द्वारा किया जाता है क्योंकि यह युग इलेक्ट्रानिक मीडिया का युग बन चुका है जिसमें अधिकतर लोग टी.वी, रेडियो और मोबाईल का प्रयोग प्रिंट मीडिया से अधिक करते हैं। लेकिन युवा के कुछ वर्ग ऐसे भी है जिनके कारण आज भी पत्रकारिता का महत्व अधिक है।

जिस प्रकार मानव जीवन तीन अंगों देह, दिल, दिमाग के मेल से टिका है, उसी प्रकार आज देश की पत्रकारिता की जिंदगी तीन तत्वों पर टिकी हुई है। वे है – विज्ञापन, सर्कुलेशन और खबर। एक व्यवसाय के रूप में पत्रकारिता का यह विवरण शायद लोगों को कुछ अतिरंजित लगे मगर इसे नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता कि आजकल पत्रकारिता की आत्मा पाठक में नहीं, बल्कि खरीदार में रहती है,

पत्रकारिता के इस दमघोटू माहौल में बदलाव कैसे लाएँ? जवाब आम तौर पर यह दिया जाता है कि पत्रकारिता को व्यावसायिकता से मुक्त किया जाए, पत्रकारिता की पूँजी की जकडन समाप्त किया जाए। लेकिन मेरे ख्याल से जरूरत है कि प्रतिबद्ध लोग इस पेशे में आएँ, ऐसे लोग सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक हो और और मुझे विश्वास है कि नई पीढ़ी इस कार्य को सफल बना पाएगी। इस कार्य को सफलता से आगे बढाने क लिए नई पीढ़ी को सामने आना होगा।

आज की आवश्यकता पत्रकारिता है समय की रफतार के साथ हमें आगे बढ़ना चाहिए। मुझे आशा है कि हमारी भावी पत्रकारिता सदाचरण और गुरूत्व की शर्त को निभाएगी, और आनेवाली पीढ़ी के ज़रिये ही समाज में ही पत्रकारिता और हिन्दी पत्रकारिता का विकास सक्षम और सृदृढ रूप से ज़रूर बढ़ेगा।

"समस्या आने पर न्याय नहीं, समाधान होना चाहिए।
क्योंकि न्याय में एक के धर दीप जलते हैं, दूसरे के धर अंधेरा होता हैं।
मगर समाधान में दोनों के धर दीप जलते हैं।"

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पत्रकारिता एक परिचय – संदीप कुमार श्रीवास्तव, जय भारती प्रकाशन 2006.

2. आधुनिक पत्रकारिता – अर्जुन तीवारी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणसी।

3. हिन्दी पत्रकारिता का स्वरूप – डॉ.गोविन्द प्रसाद, डिस्कवरी पब्लिशिंग 2007.

4. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा – इन्द्र चन्द्र रजवार, तक्षशिला प्रकाशन।

5. पत्रकारिता और समाज – डॉ.यू.सी.गुप्ता – अर्जुन पब्लिशिंग ।

6. मीडिया और प्रसारण – डॉ. रमेश मेहरा – तक्षशिला प्रकाशन।

7. पत्रकारिता और जन संचार – डॉ. अनिकुमार अध्याय, भारती प्रकाशन।

8. पत्रकारिता के परिप्रेक्ष्य – राजकिशोर, साहित्य सहकार, दिल्ली।

9. पत्रकारिता संदर्भ कोश – डॉ.रामप्रकाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

10. हिन्दी पत्रकारिता – कृष्ण बिहारी मिश्र, लोकभारती प्रकाशन, इलहाबाद।

11. हिन्दी पत्रकारिता और समाचार पत्रों की दुनिया, रत्नाकर पाण्डेय, नई दिल्ली।

12. पत्रकारिता प्रशिक्षण एवं प्रेस विधि – डॉ.सुजाता वर्मा, ज्ञानोदय प्रकाशन, कानपुर।

13. पत्रकारिता की चुनौतियॉ – गणेश मंत्री, सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली।

14. पत्रकारिता और जनसंचार, सिद्धांत एवं विकास – डॉ.अनिल कुमार उपाध्याय, भारती प्रकाशन।

15. आधुनिक मीडिया प्रबंधन – डॉ.भगवान देव पाण्डेय, मिथिलेश कुमार पाण्डेय, तक्षशिला प्रकाशन।

16. पत्रकारिता समस्या और समाधान – डॉ.यू.सी.गुप्ता – अर्जुन पब्लिशिंग।

17. पत्रकारिता : सिद्धांत एवं प्रयोग – डॉ.लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, साहित्य रत्नालय प्रकाशन, कानपुर।

18. पत्रकारिता : इतिहास और प्रश्न – कृष्ण बिहारी मिश्र, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

19. जनसंचार माध्यम : चुनौतियॉ और दायित्व – डॉ.त्रिभुवन राय, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रकाशन।

20. हिन्दी पत्रकारिता : विविध आयाम – डॉ.वेदप्रताप वैदिक हिन्दी बुक सेण्डर प्रकाशन।

21. हिन्दी पत्रकारिता का विकास – एन.सी.पंत, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली।

22. भारत में हिन्दी पत्रकारिता – डॉ.रमेश जैन, बोहरा प्रकाशन, जयपुर।

23. हिन्दी पत्रकारिता के युग : निर्माता – डॉ.लक्ष्मीशंकर व्यास, व्यास प्रकाशन, वारणसी।

24. हिन्दी पत्रकारिता के नए प्रतिमान – बच्चन सिंह, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणसी।

25. पत्रकारिता – डॉ.दर्शन कुमार जैन, लिपि प्रकाशन।

26. पत्र,पत्रकार और सरकार – काशिनाथ गोविन्द जोगलेकर, विश्वविद्यालय प्रकाशन वारणसी।

Web – Address

1. http://www.timesofindia.com
2. http://www.dhinamalar.com
3. http://www.patrika.com
4. http://www.scotbus.org>patrakarita.co.in
5. http://www.gkraftar.in>patrakarita ke prakar